Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 3

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

19 जनवरी 2017 ई

20 रबीउस्सानी 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हमारे महदी के लिए दो निशान हैं और जब से धरती और आकाश ख़ुदा ने बनाए यह दो निशान किसी और मामूर और रसूल के समय में प्रकट नहीं हुए उनमें से एक यह है कि महदी मअहूद के ज़माने में रमज़ान के महीने में चाँद का ग्रहण उसकी प्रथम रात में होगा अर्थात तेरहवीं तारीख़ में और सूर्य ग्रहण इसके दिनों के बीच दिन में होगा।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(2) निशान: सही दार कुतनी में यह एक हदीस है कि इमाम मुहम्मद बाक़िर फरमाते हैं कि انّ لمهدینا اٰیتین لم تکونا منذ خلق السمٰوات والارض ینکسف القمر لاوّل لیلۃٍ من رمضان وتنکسف الشمس فی النصف منہ अनुवाद अर्थात हमारे महदी के लिए दो निशान हैं और जब से धरती और आकाश ख़ुदा ने बनाए यह दो निशान किसी और मामूर और रसूल के समय में प्रकट नहीं हुए उनमें से एक यह है कि महदी मअहूद के ज़माने में रमज़ान के महीने में चाँद का ग्रहण उसकी प्रथम रात में होगा अर्थात तेरहवीं तारीख़ में और सूर्य ग्रहण इसके दिनों के बीच दिन में होगा। अर्थात इसी रमज़ान के महीने की अठाईस तारीख़ और ऐसी घटना दुनिया के आरंभ से किसी रसूल या नबी के समय में कभी देखने में नहीं आई बस महदी मअहूद के समय होना मुकद्दर है। अब सभी अंग्रेज़ी और उर्दू अख़बार और समस्त खगोल विशेषज्ञ इस बात के गवाह हैं कि मेरे समय में ही जिस को लगभग बारह साल का समय बीत चुका है इसी विशेषता का चाँद और सूरज का ग्रहण रमज़ान के महीने में आया है और जैसा कि एक और हदीस में कहा गया है। यह ग्रहण दो बार रमज़ान में घटित हो चुका है। प्रथम इस देश में दूसरा अमरीका में और दोनों बार उन्हीं तारीखों में हुआ है जिनकी तरफ हदीस इशारा करती है और चूंकि इस ग्रहण के समय में महदी मअहूद होने का दावेदार कोई ज़मीन पर मेरे सिवाय नहीं था और न किसी ने मेरी तरह इस ग्रहण को अपनी महदवियत का निशान करार देकर सैंकड़ों विज्ञापन और पत्रिकाएं उर्दू और फारसी और अरबी में दुनिया में प्रकाशित किए इसलिए यह आसमानी निशान मेरे लिए तय हुआ। दूसरी यह दलील है कि बारह बरस पहले इस निशान के प्रकट होने से ख़ुदा तआला ने इस निशान के बारे में मुझे बताया था कि ऐसा निशान प्रकट में आएगा। और वह खबर बराहीन अहमदिया में दर्ज हो कर इससे पहले कि यह निशान दिखाई दे लाखों आदमियों में विज्ञापित हो चुका था।

और बड़ा अफसोस है कि हमारे विरोधी सरासर पूर्वाग्रह से यह आपत्ति करते हैं। प्रथम यह है कि हदीस के शब्द यह हैं कि चाँद ग्रहण पहली रात में होगा ग्रहण बीच के दिन मगर ऐसा नहीं हुआ अर्थात उनके विचार के अनुसार "चाँद ग्रहण हिलाल की रात को होना चाहिए था जो चंद्र महीने की पहली रात है और सूरज ग्रहण चंद्र महीने के पन्द्रहवें दिन होना चाहिए था जो महीने का बीचवां दिन है।" मगर इस विचार में सरासर उन की ना समझी है क्योंकि दुनिया जब से पैदा हुई है चाँद ग्रहण के लिए तीन रातें ख़ुदा तआला के कानून प्रकृति में निर्दिष्ट हैं अर्थात तेरहवीं चौदहवीं पन्द्रहवीं और चाँद ग्रहण की पहली रात जो ख़ुदा तआला के कानून प्रकृति के अनुसार वह चंद्र महीने की तेरहवीं रात है और सूर्य के ग्रहण के लिए तीन दिन ख़ुदा के कानून प्रकृति में नियुक्त हैं। अर्थात चंद्र महीने की स्ताईसवां अठाईसवां और उनतीसवां दिन और सूरज के तीन दिन ग्रहण के चंद्र महीने की दृष्टि से अठाईसवां दिन बीच का दिन है। अत: इन्हीं तारीखों में हदीस की इच्छा के अनुसार सूर्य और चंद्रमा का रमज़ान में ग्रहण हुआ। अर्थात चाँद ग्रहण रमज़ान की तेरहवीं रात में हुआ सूर्य ग्रहण इसी रमज़ान की अठाइसवें दिन हुआ।

और अरब के मुहावरे में पहली रात का चाँद कमर कभी नहीं कहलाता बल्कि तीन दिन तक उसका नाम हिलाल होता है और कुछ के निकट सात दिन का हिलाल कहलाता है। दूसरा आरोप है कि अगर हम स्वीकार कर लें कि चंद्रमा की पहली रात से अभिप्राय तेरहवीं रात है और सूर्य के बीच के दिन से अभिप्राय अठाईसवां दिन है तो इसमें आदत से हट कर कौन सी बात हुई क्या रमज़ान के महीने में कभी चाँद ग्रहण ग्रहण नहीं हुआ तो इसका जवाब यह है कि इस हदीस का यह अर्थ नहीं है कि रमज़ान के महीने में कभी यह दोनों ग्रहण जमा नहीं हुए बल्कि यह मतलब है कि किसी रिसालत या नबव्वत का दावा करने वाले के समय में कभी ये दोनों ग्रहण जमा नहीं हुए जैसा कि हदीस के ज़हरी शब्द इसी ओर इशारा करते हैं। अगर किसी का दावा है कि किसी नबव्वुत या रिसालत दावेदार के समय में ये दोनों ग्रहण रमज़ान में कभी किसी ज़माने में इकट्ठे हुए हैं उसका कर्तव्य है कि इसका सबूत दे। ख़ासकर यह बात किसे मालूम नहीं कि इस्लामी सन अर्थात तेरह सौ वर्षों में कई लोगों ने केवल झूठ बोलने के रूप में महदी मौऊद होने का दावा भी किया बल्कि लड़ाई भी कीं। मगर कौन साबित कर सकता है कि उनके समय में चाँद ग्रहण सूर्य ग्रहण रमज़ान के महीने में दोनों इकट्ठे हुए थे। और जब तक यह सबूत पेश न किया जाए तब तक निस्संदेह यह घटना आदत से हट कर है क्योंकि खारक आदत इसी को तो कहते हैं कि मिसाल दुनिया में न पाई जाए और केवल हदीस ही नहीं बल्कि कुरआन शरीफ ने भी बताया है । देखो وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ 1

1 ख़ुदा तआला ने संक्षिप्त शब्दों में कह दिया कि अंतिम समय की निशानी यह है कि एक ही महीने में शम्स और कमर के कसोफ तथा खसोफ जमा होंगे और इसी आयत के अगले भाग में फरमाया कि इस समय इंकार करने वाले को भागने की जगह नहीं रहेगी। जिस से स्पष्ट है कि वे कसोफ तथा खसोफ महदी मअहूद के ज़माने में होगा। सारांश यह है कि चूंकि वह कसोफ तथा ख़सोफ ख़ुदा की भविष्यवाणी के अनुसार घटित होगा इसलिए इंकार करने वालों पर हुज्जत पूरी होगी। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 202 -204)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

हुज़ूर अनवर के साथ वकफे नौ किलास
(प्यारे हुज़ूर की प्यारी बातें)

प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ वाकफीन नौ की किलास के कुछ सवाल

तरबियत के लिए ज़रूरी बातें

एक बच्ची ने सवाल किया कि बच्चों के तरबियत के बारे में कोई चीज़ जो बहुत ज़रूरी हो ? इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपना नमूना ऐसा करें कि बच्चे उसे देखकर पालन करें और नमूना पकड़ें। नमाज़ों में पाबन्दी आप में हो। कुरआन की तिलावत आप रोज़ाना करने वाले हों, माँ और पिता दोनों तिलावत करने वाले हों, सिर्फ नेकी करने की हिदायत न हो बल्कि ख़ुद नेकियों की तरफ माँ बाप का भी ध्यान हो। सच बोलने की ओर आदत मां बाप की हो। ग़लत बात को बर्दाशत न करें। बच्चे को यह पता हो कि मेरे मां बाप ख़ुद भी सच बोलते हैं और सच पसंद करते हैं तो आपका अपना काम है जो बच्चों को नेक बनाएगा।

ख़िलाफत के सम्मान की एक घटना

एक बच्ची ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर बचपन में किसी बुज़ुर्ग या किसी सहाबी के साथ कोई यादगार घटना हो तो हुज़ूर बताएं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: हमारे दादा (हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब) जब फौत हुए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे छोटे बेटे थे, उस समय मेरी उम्र ग्यारह साल थी। तो दो साल पहले उन्होंने एक बार हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि से मिलने जाना था। वह मुझे भी साथ ले गए। तो यह नहीं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि के छोटे भाई थे इसलिए घर के अंदर चले गए। आपने ऐसा नहीं किया बल्कि घर के बाहर खड़े रहे और मुझे अंदर भेजा जा कर बताओ कि मैं मिलना चाहता हूँ। तो मैं ऊपर गया और छोटी आपा (हज़रत मरियम सिद्दीक़ा साहिबा मरहूमा) की वहां ड्यूटी थी। मैंने उन्हें बताया कि वह मिलने आ रहे हैं। हज़रत हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि की तबीयत ठीक नहीं थी। वह लेटे हुए थे तो हुज़ूर के Bed एक ओर उन्होंने कुर्सी रख दी। फिर मैं नीचे आया और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब को ऊपर ले गिया। आप ने ऊपर जाकर कुर्सी एक तरफ कर दी और नीचे फर्श पर बैठ गए। उस ज़माने में कारपेट तो नहीं होते थे साधारण दरियां होती थीं जो फर्श पर बिछी हुई थी। इसलिए उन्होंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि सो जो बातें करनी थीं कीं। मैं तो आठ, नौ साल का था मुझे पता नहीं कि क्या बातें हुईं। बहरहाल, इस के बाद बड़े अदब से उठे और पीछे होते हुए चले गए। तो वह एक सबक मेरे मन में अभी भी है। ख़िलाफत का सम्मान कैसे करना चाहिए। चाहे भाई हो लेकिन ख़िलाफत का अदब और सम्मान प्रथम है। इस तरह कई बड़ों की बातें होती हैं जो हमेशा याद रहती हैं। उस समय से, बचपन से ही मेरे दिमाग़ में यह घटना याद है और यह याद है कि ख़िलाफत का सम्मान करना है।

(अल्फज़ल 15-21 नवम्बर 2013)

एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि जब इमाम नमाज़ पढ़ा रहा हो, जैसे तीन रकअत, बल्कि दो पढ़ा दे तो क्या करना चाहिए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "सबहान अल्लाह " एक बार कह दो। अगर इमाम ने सुन लिया तो ठीक है। नहीं तो चुप रहो और बार बार न कहो। यह नहीं कि पहले पहली सफ और फिर दूसरी सफ वाले "सुबहान अल्लाह" कहना शुरू करते हैं और फिर तीसरी सफ शुरू कर दे। इस तरह बार बार कहने से इमाम को भूल जाता है कि मुझे करना क्या है, क्या ग़लती हो गई है, वह नमाज़ में कुछ कह नहीं सकता, कुछ कहने की इज़ाज़त नहीं है। तो इसलिए एक बार "सुबहान अल्लाह" कहना काफी है। इमाम को समझ आ गया तो ठीक है, नहीं याद आता तो चुप रहो और जब इमाम सलाम फेर दे तो उसे याद करवा दो कि आप ने दो रकअतें पढ़ी थीं, पूरी तीन रकअत, नहीं पढ़ीं सके। तो इमाम सलाम फेरने के बाद फिर खड़ा हो जाएगा और एक रकअत पढ़ा देंगे। सारे इसके साथ पढ़ेंगे और रकअत के बाद जब सलाम फेरने लगे तो इससे पहले सिज्दा सहो दो सज्दे करेगा और सलाम फेर देगा। बस एक बार इमाम को याद करवा दो। कुछ बार इमाम confuse हो जाते हैं। मुझे भी कई बार लोग "सुबहान अल्लाह " इस तरह कहने लगते हैं कि पता ही नहीं लगता कि ग़लती क्या है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : एक बार ऐसा संयोग हो चुका है कि कोई कुछ नहीं बोला और मैं दो रकअत, मग़रिब की नमाज़ के बाद सलाम फेर दिया तो नमाज़ियों ने कहा कि आप ने तो दो रकअतें पढ़ी हैं। मैंने कहा ठीक है, तो एक रकअत और पढ़ लेते हैं। तो यह हो जाता है, हर एक से हो जाता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक बार चार के बजाय पांच रकअत, पढ़ा दी थीं। साहाबा ने कुछ नहीं कहा। बाद में किसी ने कहा कि नमाज़ के बारे में नया हुक्म आ गया है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि नहीं। तो कहा गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो पांच रकअतें पढ़ी हैं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुझे "सुबहान अल्लाह" कहकर याद करा देना था। भूल तो प्रत्येक से हो सकती है। लेकिन अगर इमाम को याद आ जाए तो ठीक है वरना वह सलाम फेरने के बाद नमाज़ का जो हिस्सा रह गया है, वह पूरा कर लेगा।

एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि फजर, मग़रिब और इशा की नमाज़ में इमाम तिलावत ऊंची आवाज़ में पढ़ता है। तो दूसरी नमाज़ में तिलावत ज़ोर से क्यों नहीं पढ़ी जाती?

इसके जवाब में सामने अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: एक कारण तो यह है कि इसी तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें करके दिखाया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो सुन्नत थी, उसी के अनुसार हम करते हैं। दूसरी हिक्मत यह भी हो सकता है कि समय के अनुसार जो हालत है, वैसे ही पढ़ते हैं। जैसे ज़ुहर या असर की नमाज़ का जो वक्त होता है वह ऐसा होता है जिस में ख़ामोशी छाई हुई होती है और ख़ामोशी मैं इबादत को जो एक माहौल होता है, अर्थात बिना ज़ोर के तो इस इबादत में अधिक आराम होता है, अर्थात मानव प्रकृति के अनुसार यह दोनों काम हो रहे हैं। प्रकृति का जो एक वातावरण है, यह तदनुसार है।

एक वक्फ नौ ने कहा कि मैं अक्सर देखता हूँ कि जब मैं नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ रहा होता हूँ तो इमाम साहब जब सलाम फेरते हैं तो सुन्नतों की अदायगी के लिए मुसल्ला से कभी दांए और कभी बांए ओर खड़े होते हैं। इसी तरह लोग भी अपनी जगह से हट कर आगे या पीछे खड़े होते हैं। इसकी क्या वजह है ?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह एक तरह की सुन्नत ही है कि अपनी जो नमाज़ की जगह है, इसे बदल लो। अगर आपके पास जगह है तो उसे बदल कर दो कदम उधर हो जाए ताकि मस्जिद की हर जगह का हिस्सा है, यदि इससे कोई बरकत है, तो वह आपको मिल जाए। और आप अपने घर में भी कुछ हिस्सों में नमाज़ पढ़ रहे होते हैं और नमाज़ में दुआ कर रहे हैं, वह भी इसलिए है कि घर में नमाज़ पढ़ने की जगह को नमाज़ पढ़ने की वजह से बरकत मिल जाए। (अल्फज़ल इंटरनेशल 19 जुलाई 2013 ई)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

मअरफते हक
कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आवाज़ आ रही है ये फोनोग्राफ से	ढूँढो ख़ुदा को दिल से न लाफ़ो गज़ाफ़ से
जब तक अमल नहीं है दिले पाको साफ़ से	कमतर नहीं है मशग़ला बुत के तवाफ़ से
बाहर अगर नहीं दिल मुर्दा ग़िलाफ़ से	हासिल ही क्या है जन्गो जिदालो ख़िलाफ़ से
वो दीं ही क्या है जिस में ख़ुदा से निशाँ न हो	ताईदे हक न हो मददे आसमाँ न हो
मज़हब भी एक खेल है जब तक यकीं नहीं	जो नूर से तही है ख़ुदा से वो दीं नहीं
दीने ख़ुदा वही है जो दरयाए नूर है	जो इस से दूर है वो ख़ुदा से भी दूर है
दीने ख़ुदा वही है जो है वो ख़ुदा नुमा	किस काम का वो दीं जो न होवे गिरह कुशा
जिन का ये दीं नहीं है नहीं उनमें कुछ भी दम	दुनिया से आगे एक भी चलता नहीं कदम

वो लोग जो कि मअरफते हक में ख़ाम८ हैं
बुत तर्क करके फिर भी बुतों के ग़ुलाम हैं

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

कुछ लोग कुछ उहदेदारों के ख़िलाफ या कुछ ऐसे लोगों के ख़िलाफ भी जो उहदेदार नहीं शिकायत करते हैं कि ये ऐसे हैं और ये वैसे हैं। उसने अमुक अपराध किया और उसने अमुक शरीयत के ख़िलाफ हरकत की। तो तुरंत उनके ख़िलाफ कार्रवाई होनी चाहिए क्योंकि ये लोग जमाअत को बदनाम कर रहे हैं लेकिन अक्सर ऐसे लिखने वाले अपनी शिकायतों में अपने नाम नहीं लिखते या फर्ज़ी नाम और फर्ज़ी पता लिखते हैं। ऐसे लोगों की शिकायतों पर ज़ाहिर है कोई कार्रवाई नहीं होती और न हो सकती है।

जो शिकायत करने वाले अपना नाम नहीं लिखते या फर्ज़ी नाम लिखते हैं उनमें पहली बात तो यह है कि या पाखंड होता है या वे झूठे होते हैं। आमतौर पर देखा गया है कि दूसरों पर भयानक आरोप लगाने वाले चाहे कोई उहदेदार है या उहदेदार नहीं है उस समय किसी के बारे में भयानक और भयावह आरोप लगाते हैं या बड़ी शिद्दत से आरोप लगाते हैं जब देखते हैं कि उनके निजी हित दूसरों से प्रभावित वाले हैं। अतः अनुसंधान करने से पहले यह देखना पड़ता है कि शिकायत करने वाला कैसा है।

इन सभी शिकायत करने वालों पर जो नाम नहीं लिखते स्पष्ट होना चाहिए कि उनका यह कर्म कि अपनी पहचान के बिना शिकायत करें कुरआन के आदेश के ख़िलाफ है क्योंकि कुरआन कहता है कि पहले शिकायत करने वाले के बारे में अनुसंधान करो। जब नाम ही प्रकट नहीं हो रहा तो अनुसंधान किस तरह होगा और यह कुरआन के आदेश के स्पष्ट ख़िलाफ है। अतः शिकायत करने वाला ख़ुद कुरआन के आदेश को तोड़ता है।

चाहे किसी को अपने ज़ौकी दृष्टिकोण से या समाज के प्रभाव में कोई बात बुरी लगे लेकिन अगर कुरआन की शिक्षा के अनुसार या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार वह सही है तो वह सही है और इसमें कोई दोष नहीं। कुछ लोग अपनी तबियत और रस्मो रिवाज से प्रभावित होकर कुछ मामलों में सख्ती दिखाते हैं लेकिन उनकी बातें चाहे धर्म के नाम पर ही हूँ उनकी कोई हैसियत नहीं है।

कुछ बातें ऐसी हैं जहां गवाहों की आवश्यकता है। अगर गवाह पेश नहीं हुए तो इस बात की कोई हैसियत नहीं होती।

हमेशा याद रखना चाहिए कि किसी की शिकायत पर फैसला सिर्फ उस के बताए हुए नियम के अनुसार नहीं होगा। शिकायत पर फैसला ख़ुदा तआला के बताए हुए तरीके के अनुसार होगा। जहां दो गवाहों की ज़रूरत है वहाँ दो गवाह पेश करने होंगे जहां चार गवाहों की जरूरत है वहाँ चार गवाह पेश करने होंगे और तदनुसार ही फिर अनुसंधान और फैसला होगा। हमारी सफलता इसी में है कि हम ख़ुदा तआला के आदेश के अनुसार अपने मामलों और निर्णय करने वाले बनें और अपने निजी अहंकारों और प्राथमिकताओं को आधार बनाकर प्रशासन को मजबूर करने वाले या समय के ख़लीफा को मजबूर करने वाले न हों कि उसके अनुसार निर्णय किए जाएं।

आदरणीय शेख साजिद महमूद साहिब पुत्र आदरणीय शेख मजीद अहमद साहिब आफ हलका गुलज़ार हिजरी कराची की शहादत, आदरणीय शेख़ अब्दुल क़दीर साहिब दरवेश कादियान की वफात, आदरणीय तनवीर अहमद लोन साहिब नासिराबाद कश्मीर की शहादत, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 2 दिसम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

कुछ लोग कुछ उहदेदारों के ख़िलाफ या कुछ ऐसे लोगों के ख़िलाफ भी जो उहदेदार नहीं शिकायत करते हैं कि ये ऐसे हैं और ये वैसे हैं। उसने अमुक अपराध किया और उसने अमुक शरीयत के ख़िलाफ हरकत की। तो तुरंत उनके ख़िलाफ कार्रवाई होनी चाहिए क्योंकि ये लोग जमाअत को बदनाम कर रहे हैं लेकिन अक्सर ऐसे लिखने वाले अपनी शिकायतों में अपने नाम नहीं लिखते या फर्ज़ी नाम और फर्ज़ी पता लिखते हैं। ऐसे लोगों की शिकायतों पर ज़ाहिर है कोई कार्रवाई नहीं होती और न हो सकती है और जब कुछ समय बीत जाए तो शिकायत आती है कि मैंने लिखा था अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई तो कार्रवाई न हुई तो बड़ा अन्याय होगा। यह बेनाम शिकायत करने की बीमारी जो है यह पाकिस्तान और भारत के लोगों में अधिक है। बाकी दुनिया के स्थानीय लोगों से तो शायद ही कोई इस प्रकार की शिकायत आई होगी लेकिन पाकिस्तानी जो बाहर देशों में भी बसे हैं उनमें भी कुछ में यह बीमारी है कि इस तरह की बेनाम शिकायत कर बात करें। तो यह कोई नई बात नहीं है हर दौर में ऐसे लोग पाए जाते रहे जो इस प्रकार की शिकायतें करने वाले हैं जिस तरह आजकल कुछ लोग मुझे लिखते हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के दौर में भी ख़िलाफत सालिसा में भी ख़िलाफत राबिया में भी यह शिकायत करने वाले थे जो बेनामी शिकायतें करते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने एक ऐसी शिकायत पर एक बार एक ख़ुत्बा दिया था क्योंकि यह ऐसे लोगों का मुंह बंद करवाने के लिए बड़ा व्यापक और स्पष्ट है इसलिए इस ख़ुत्बा से मैंने लाभ उठाते हुए आज कुछ कहने का सोचा है।

जो शिकायत करने वाले अपना नाम नहीं लिखते या फर्ज़ी नाम लिखते हैं उनमें पहली बात तो यह है कि या यह पाखंड होता है या वे झूठे होते हैं। अगर उनमें साहस और सत्य हो तो किसी भी चीज़ की परवाह करने वाले न हों। अहद तो यह है कि हम जान माल समय और सम्मान को कुर्बान करने के लिए हर समय तैयार रहेंगे और यहाँ जब मामला उनके विचार में जमाअत की गरिमा का आता है तो अपना नाम छिपाने लग जाते हैं ताकि कहीं उनकी गरिमा और उनके सम्मान को नुकसान न पहुंच जाए। तो जिसने शुरुआत में ही कमज़ोरी दिखा दी उसकी बाकी बातें भी ग़लत होने की बड़ी स्पष्ट संभावना है।

कुरआन में तो अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम्हारे पास अगर कोई खबर पहुंची तो अनुसंधान कर लिया करो और यह बात हर समझदार जानता है कि किसी भी अनुसंधान के लिए बात कहने वाला या बात पहुंचाने वाले की बात सुनकर फौरन इस बात के बारे में अनुसंधान नहीं शुरू हो सकती न होती है बल्कि यह देखा जाता है कि यह बात पहुंचाने वाला ख़ुद कैसा है उसी से अनुसंधान की शुरुआत होती है। इसके बारे में पहले अनुसंधान होगी कि क्या वह हर प्रकार की बुराइयों से मुक्त है। ख़ुद तो वह किसी बुराई में नहीं। ईमान में कमज़ोर तो नहीं है या यह न हो कि ख़ुद तो ईमान में कमज़ोर हो और दूसरों पर आरोप लगा रहा है कि यह ऐसा है, वैसा है।

आमतौर देखा गया है कि दूसरों पर भयानक आरोप लगाने वाले चाहे कोई उहदेदार है या उहदेदार नहीं है उस समय किसी के बारे में भयानक और भयावह आरोप लगाते हैं या बड़ी शिद्दत से आरोप लगाते हैं जब देखते हैं कि उनके निजी हित दूसरों से प्रभावित होने वाले हैं। अतः अनुसंधान करने से पहले यह देखना पड़ता है कि शिकायत करने वाला कैसा है वह मोमिन है या दुराचारी है? जब शिकायत

करने वाले का ज्ञान ही नहीं तो यह भी पता नहीं चल सकता कि वह किस श्रेणी में आता है। हाँ, यह संभव है कि अगर कोई लिखने वाला मामला लिखता है जो जमाअत के हितों को नुकसान पहुंचाने वाला है तो अपने दम पर अनुसंधान कर ली जाती है। इसी तरह अगर यह भी पता हो कि शिकायत करने वाला कौन है तो जैसा कि मैंने कहा कि पहले उस के चरित्र के बारे में अनुसंधान होगी। इसी तरह अपने तरीका पर जो उस ने बातें की हैं उसकी सच्चाई के बारे में भी अनुसंधान होगा ताकि पता लगे कि वह सच कहता है या नहीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि कुरआन की शिक्षा है अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि إِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوٓا (सूरह अल्हुजरात 7) अगर तुम्हारे पास कोई दुराचारी शिकायत लेकर आता है और किसी के बारे में कोई बुरी बात कहता है तो इस का अनुसंधान करो। फिर उसके बाद कोई कार्रवाई करो लेकिन शिकायत करने वाले एक तो अपना नाम न लिखकर ख़ुद दोषी बनते हैं फिर यह भी कहते हैं कि उनकी बात उसी तरह स्वीकार भी की जाए जिस तरह उन्होंने लिखी है और जिसके ख़िलाफ शिकायत है तुरंत इसके लिए सज़ा का आदेश लागू कर दिया जाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि फासिक़ (अनैतिक) के अर्थ केवल बुरे के ही नहीं हैं इसमें कोई संदेह नहीं कि अरबी में बुरे को भी फासिक कहते हैं लेकिन शब्दकोश के अनुसार फासिक (दुराचारी) उसे भी कहते हैं जो तेज़ तबीयत वाला हो बात बात पर लड़ पड़ता हो। फिस्क़ के अर्थ निम्न स्तर की आज्ञाकारिता के भी हैं आज्ञाकारिता से बाहर निकलने वाला भी अनैतिक है अनैतिक के अर्थ सहयोग न करने वाले के भी हैं। लड़ाका भी और फिर सहयोग न करने वाला हो। फासिक के अर्थ उस व्यक्ति के भी हैं जो लोगों के छोटे छोटे अपराधों को लेकर बढ़ा कर वर्णन करता है और फिर यह भी समझता है और यह कहता है कि जो उसने वर्णन किया है उस के अनुसार दूसरे को बेहद सज़ा मिलनी चाहिए। कोई माफी की संभावना नहीं है। उग्र स्वभाव को भी फासिक़ कहते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो एक अहमदी दोस्त के बारे में बयान फरमाते हैं जो, पुराने निष्ठावान अहमदी थे कि जहां तक उनकी ईमानदारी का संबंध है इसमें कोई शक नहीं लेकिन उन्हें छोटी सी बात पर बेहद फतवा लगाने की आदत थी। आप कहते हैं कि उनकी तबीयत में यह रोग था कि छोटी-छोटी बातों को लेकर कुफ्र से कम नहीं ठहरते थे कोई बात पकड़ी और कुफ्र का फतवा लगा दिया। जैसे आप लिखते हैं कि फ़र्ज़ करो कि तशह्हुद बैठे होते हैं ,जब अत्तहयात में बैठते हैं तो अपने दाहिने पैर की उंगलियां जो सीधी नहीं रखता, (पांव सीधी रखने का आदेश है) तो उनके निकट वह कुफ्र की हद तक पहुँच जाता था। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि उन्हें नकरस की परेशानी के कारण(उन को gout था) दाहिने पैर की उंगलियां तशह्हुद की हालत में सीधी नहीं रख सकता था पहले रखा करता था जब पैर ठीक होता था। आप फ़रमाते हैं कि अगर हाफिज़ साहिब जीवित होते तो शायद शाम तक वह मुझ पर भी कुफ्र का फतवा लगा देते। तो ऐसे लोग भी होते हैं। इसलिए लगाते कि यह पैर की उंगलियां सीधी नहीं रखते और ऐसा करना रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के ख़िलाफ है अत: मालूम हुआ कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर ईमान नहीं। अगर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर ईमान नहीं तो कुरआन पर भी ईमान नहीं और अगर कुरआन पर ईमान नहीं तो अल्लाह तआला पर ईमान नहीं तो काफ़िर हो गए। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद ने ऐसे जल्दबाज़ों की चाहे निष्ठावान भी हो यह उदाहरण दी है लेकिन जो नाम भी छिपाता हो और ख़ुद ईमान में भी कमज़ोर हो और वह दूसरों पर फतवे भी लगाता है तो इन सभी अर्थों की दृष्टि में जो फासिक के वर्णन किए गए हैं फासिक ही ठहरता है।

इसलिए इन सभी शिकायत करने वालों पर जो नाम नहीं लिखते स्पष्ट होना चाहिए कि उनका यह कर्म कि अपनी पहचान के बिना शिकायत करें कुरआन के आदेश के ख़िलाफ है क्योंकि कुरआन कहता है कि पहले शिकायत करने वाले के बारे में अनुसंधान करो। अगर केवल शिकायत करने वाले की बात पर ही बिना अनुसंधान के काम होने लग जाए जो वह मांग करता है तो जमाअत तरक्की के स्थान पर पतन की ओर जाना शुरू हो जाएगा गिरावट का शिकार हो जाए। समय का ख़लीफा भी और जमाअत की प्रणाली की भी अपना कोई अनुसंधान नहीं होगा जो कोई कहेगा उस पर अनुकरण होना शुरू हो जाएगा और यह बात तो विकास की ओर नहीं ले जा सकती। हर कोई उठेगा और यही कहेगा कि मेरी इच्छाओं के अनुसार निर्णय किए जाऐं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद बयान करते हैं कि अगर हम जानते भी हों कि शिकायत करने वाला व्यक्ति बड़ा सावधान है। सच्चा है। निष्ठावान भी है अगर वह किसी की शिकायत करता है तो तब भी सब कुछ जानने के बावजूद भी अवश्य ही अनुसंधान करना होगा और अनुसंधान होगा। यह विश्वास भी हो जाए जैसा कि मैंने कहा कि शिकायत करने वाले में ईमानदारी भी है अच्छा भी है, नेक है, ग़लती नहीं करता फिर भी इस मामला का अनुसंधान होगा और इसके बारे में भी अनुसंधान होगी क्योंकि कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता क्योंकि मैं कह रहा हूं इसलिए यूं ही समझना चाहिए और उसके अनुसार फैसला होना चाहिए।

आप फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बार नमाज़ पढ़ रहे थे। नमाज़ के दौरान कोई भूल हो गई तो हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो मुकतदियों में शामिल थे उन्होंने लुक्मा दिया। तिलावत करते हुए भूल हो गई। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे पसंद नहीं फरमाया। आप ने उन्हें फरमाया कि तुम्हें किस ने कह दिया कि लुक्मे दो। आप फरमाते हैं कि इस नापसंदगी का एक यह भी मतलब हो सकता है कि तुम्हारे ज़िम्मे और बड़े काम हैं इन छोटे कार्यों को दूसरों के लिए रहने दो और यह भी मतलब हो सकता है कि यह काम उन कारियों के लिए है जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुरआन सीखते थे तुम यह काम उनके लिए रहने दो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद अपने पास इस बेनाम शिकायत करने वाले के बारे में फरमाते हैं कि हो सकता है शिकायत करने वाला कोई बड़ा आदमी हो तो मैं उसे कहूँ कि तुम इन बातों को किसी और के लिए रहने दो और अपने मूल काम की ओर ध्यान दो। तो लिखने वाले ने अपना नाम ज़ाहिर नहीं किया इसलिए इस के स्तर और स्थिति का ज्ञान नहीं हो सकता उसे समझाया नहीं जा सकता।

दूसरी बात यह कि उस ने कई उहदेदारों, नाज़िरों और लजना के भी दोष बयान करने शुरू कर दिए थे और बड़े ग़लत तरह के आरोप लगाए थे और कहा कि साहिब यह दोष है। एक तरफ तो वह उन लोगों की शिकायत कर रहा है कि वे कुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा के ख़िलाफ काम करते हैं क्योंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन की शिक्षा के ख़िलाफ काम करना ही बहुत बड़ा दोष है। इसलिए बहुत बड़ा दोष उनमें पाया जाता है। अगर कोई मुसलमान कुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ कोई काम नहीं करता तो वह दोष नहीं है लेकिन अगर इस शिक्षा के ख़िलाफ वह कोई काम कर रहा है तो वह दोष है। बहरहाल यह शिकायत करने वाला एक तरफ तो यह कहकर रहा है कुरआन और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा के ख़िलाफ काम कर रहे हैं दूसरी ओर ख़ुद उसके ख़िलाफ जाता है कि उसने शिकायत की और सबूत की जो शर्तें रखी हैं वह ख़ुद उन्हें तोड़ रहा है और अक्सर लोग यही करते हैं। मुझे भी जब लिखते हैं इन नियमों को ही तोड़ रहे हैं। असली बात तो कुरआन के आदेश पर और सुन्नत पर अनुकरण करना ही है और क़ुरआन तो यह कहता है कि खुल कर जब बात की जाए तो इसके सबूत भी मुहैया किए जाएं। अनुसंधान भी किया जाए। जब नाम ही प्रकट नहीं हो रहा तो अनुसंधान किस तरह होगा और यह कुरआन के आदेश के स्पष्ट ख़िलाफ है। अत: शिकायत करने वाला ख़ुद कुरआन के आदेश को तोड़ता है। कुरआन की शिक्षा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा का पालन करना यही नेकी है यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए। चाहे किसी को अपने ज़ौकी दृष्टिकोण से या समाज के प्रभाव में कोई बात बुरी लगे लेकिन अगर कुरआन की शिक्षा के अनुसार या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार वह सही है तो वह सही है और इसमें कोई दोष नहीं।

कुछ लोग अपनी तबियत और रस्मो रिवाज से प्रभावित होकर कुछ मामलों में सख्ती दिखाते हैं लेकिन उनकी बातें चाहे धर्म के नाम पर ही हूँ उनकी कोई हैसियत नहीं है। इस बात को समझाने के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की घटना वर्णन करते हैं कि पहले भी कई बार यह घटना बयान हो चुकी है। अब इस विस्तार के साथ इस बारे में आ रही है कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत उम्मुल मोमेनीन को साथ लेकर स्टेशन पर सैर कर रहे थे। (उन दिनों पर्दे का अर्थ बहुत कठोर लिया जाता था) उस समय बड़ा कठोर पर्दा होता था। स्टेशन पर डोलियों में औरतें आती थीं। बड़े लोग जो ख़ानदानी लोग कहलाते थे उनकी औरतें तो डोलियों में बैठ कर आती थी और दाएँ बाएँ उस की चादरें गिरी होती थीं और फिर वहां ट्रेन के डिब्बे इसी तरह बंद डिब्बा में आती थीं और डिब्बे के अंदर चली जाती थीं। पर्दे का ऐसा प्रबंध था और जब डिब्बे में बैठ जाती थीं तो खिड़कियां बंद कर दी जाती थीं ताकि किसी महिला पर नज़र न पड़े।

आप कहते हैं यह पर्दा तकलीफ देने वाला था और इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्लाम की शिक्षा का पालन करते थे। हज़रत उम्मुल मोमनीन बुर्का पहन लेती थीं और सैर के लिए बाहर चली जाती थीं। उस दिन भी हज़रत उम्मुल मोमनीन ने बुर्का पहना हुआ था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आपको साथ लिए हुए प्लेट फार्म पर टहल रहे थे। मौलवी अब्दुल करीम साहिब और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल भी साथ थे। मौलवी अब्दुल करीम साहिब की तबीयत में तेज़ी थी उन्हें विचार हुआ कि यह ग़लत हो रहा है। ख़ुद तो हिम्मत नहीं थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कहने जाते। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के पास गए और कहा कि मौलवी साहिब यह क्या ग़ज़ब हो गया कल अख़बारों में शोर पड़ जाएगा विज्ञापन और टरेक्ट निकल आएंगे कि मिर्ज़ा साहिब प्लेट फार्म पर अपनी पत्नी को साथ लेकर फिर रहे थे, तो आप जा के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को समझाएं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह ने अव्वल कहा इसमें क्या बुराई है मुझे तो कोई बुराई नज़र नहीं आ रही। आप को बुराई लग रही तो ख़ुद ही जाकर कह दें। बहरहाल मौलवी अब्दुल करीम साहिब हज़रत मसीह मौऊद के पास गए। आप टहलते हुए बड़ी दूर चले गए थे और जब वापस आए तो गर्दन झुकी हुई थी। हज़रत ख़लीफा अव्वल कहते हैं कि मुझे शौक हुआ कि पूछूँ क्या जवाब मिला। अत: मैंने पूछा मौलवी साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या फरमाया। मौलवी साहिब ने कहा कि जब मैंने हुज़ूर से कहा कि आप यह क्या कर रहे हैं लोग क्या कहेंगे।? तो आपने फ़रमाया आख़िर वह क्या कहेंगे। यही कहेंगे न कि मिर्ज़ा साहिब अपनी पत्नी के साथ ऐसा फिर रहे थे। मौलवी साहिब लज्जित होकर लौट गए। हज़रत उम्मुल मोमनीन ने पर्दा किया हुआ था और फिर पति पत्नी का इकट्ठे फिरना आपत्तिजनक नहीं है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अपनी पत्नियों के साथ फिरते थे। एक बार लोगों के सामने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत आयशा दौड़े थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहली बार पीछे रह गए और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा जीत गईं दूसरी बार फिर कुछ समय के बाद दौड़े और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत आयशा से जीत गए और वह हार गईं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर कहा आयशा। "तिलक बतलक।" कि आयशा इस हार के बदले की यह हार हो गई। अत: रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी पत्नियों के साथ फिरना बुरा विचार नहीं कहते थे और जिस बात की अनुमति इस्लाम ने दी है उसे दोष नहीं कहा जा सकता। इसलिए अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे पर आपत्ति करता है तो इसका अर्थ यह है कि उसके निकट वह व्यक्ति इस्लामी शिक्षा का पालन नहीं करता।

फिर आप फिर शिकायत करने वाले के बारे में बताते हैं कि लेकिन उसने अपने पत्र में लिखा है कि अमुक छोटी स्थिति का है (वहां फिर उस पर पारिवारिक और व्यक्तिगत आपत्तियां भी उस पर शुरू हो गए।) अमुक कमीना है और इसे आप ने अमुक पद दिया हुआ है और कुछ आरोप ऐसे लगाए जिसके बारे में शरीयत ने गवाह तलब किए हैं और गवाह भी स्पष्ट देखने के मांगे हैं अर्थात शरीयत इस के बारे में यह कहती है कि स्पष्ट देखने के चार गवाह हों तो वह शिकायत में सही हैं वरना नहीं। कुछ लोग यूं ही किसी संबंध के आरोप लगा देते हैं अगर उसके लिए लड़का लड़की के संबंध के आरोप लगाना है तो इस्लाम में चार गवाह भी आवश्यक हैं। आप फरमाते हैं लेकिन अजीब बात यह है कि धर्म का सम्मान ऐसे व्यक्ति को पैदा हुआ जो ख़ुद कुरआन की शिक्षा के ख़िलाफ पालन करता है और दूसरों पर ऐसे आरोप लगाता है जिनसे कुरआन ने मना किया है और न केवल मना बल्कि उन पर ऐसे आरोपों पर सीमा भी तय है कि किसी पर ग़लत आरोप लगाने वाले जो हैं ऐसा कहने वाले को ही अस्सी कोड़े लगाओ। मानो शरीयत ने इस बारे में जो इतना गंभीर आदेश दिया है वह उसे तो तोड़ता है और कहता है कि यह अमुक व्यक्ति कुरआन की शिक्षा के ख़िलाफ चलता है हालांकि वह ख़ुद कुरआन की शिक्षा के ख़िलाफ चल रहा होता है।

आप फरमाते हैं कि देखो शिकायत करने वाले की स्थिति क्या हुई। पहले तो उसने अपना नाम प्रकट नहीं किया तो जो सबूत आवश्यक हैं वह पेश नहीं किए। शरीयत के नियमों से न तो मैं आज़ाद हूँ न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वतंत्र हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद शरीयत के नियमों पर चलने के लिए मजबूर थे तब उस व्यक्ति ने कुछ ऐसी आपत्तियां की हैं जिन पर शरीयत में हद लगाती है और शरीयत ने उनके लिए गवाही का जो तरीका निर्धारित किया है इस मार्ग पर चलना चाहिए लेकिन वह कहता है कि अमुक ने कुरआन करीम का अमुक आदेश तोड़ा है उसे सज़ा दो लेकिन मुझे कुछ नहीं कहना।

हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं मुझे बचपन का एक लतीफा याद आ गया उस समय मैंने उससे बहुत मज़ा उठाया था और अब भी मुझे याद आता है तो हंसी आती है। कहते हैं कि पांचवीं या छठी कक्षा में पढ़ता था तो हमारे उस्ताद ने यह तरीका तय किया हुआ था कि उनके सवाल का जवाब जो छात्र निर्धारित समय पर दे दे वह ऊपर के नम्बर पर आ जाएगा। हम खड़े थे शिक्षक ने सवाल किया एक लड़के ने जवाब दिया दूसरे ने हाथ बढ़ाकर कहा मास्टर जी यह जवाब ग़लत है मास्टर साहिब ने पहले लड़के से कहा, तुम नीचे आ जाओ और दूसरे को कहा तुम ऊपर चले जाओ। नीचे आते ही उस लड़के ने जो पहले ऊपर नंबर पर था कहा कि मास्टर साहिब ने मेरी ग़लती निकालते हुए ग़लत शब्द को गलत कहा है जो ग़लत है इस शिक्षक ने फिर उसे पूर्व जगह पर खड़ा कर दिया और दूसरे लड़के को नीचे गिरा दिया। तो आप कहते हैं कि यही हालत कुछ आरोप लगाने वालों की होती है। वे दूसरे पर ग़लत या सही आपत्ति करते हैं लेकिन आरोप का तरीका आपराधिक होता है और इस तरह उसे सज़ा दिलाते दिलाते स्वयं सज़ा के हकदार हो जाते हैं और फिर शोर मचाते हैं कि दोषी कोई पकड़ता नहीं जो ध्यान दिलाता है उसे सज़ा दे देते हैं हालांकि सज़ा देने वाले क्या करें वे भी तो शरीयत के ग़ुलाम हैं। अगर कुरआन की हुकूमत को स्थापित करना चाहते हैं तो अपने पर भी ख़ुदा तआला की हुकूमत स्थापित करो। अगर आप यह चाहते हो कि दूसरों पर तो ख़ुदा तआला की हुकूमत स्थापित हो और तुम पर अल्लाह तआला की हुकूमत कायम न हो तो यह सही नहीं है। तो मैं शिकायत करने वालों से कहता कहूँ कि "अयाज़ कदर ख़ुद बशनास" कि अयाज़ तुम अपना मूल्य और अपनी स्थिति को पहले याद रखो और पहचानो। नाम छिपाने वाले अपने नाम छिपा कर दूसरों पर आरोप लगाते हैं कि उनकी कोई हैसियत नहीं है और इसलिए आरोपों में जो सबूत पेश कर रहे हैं वह यह कि अमुक तो अमुक परिवार का है अमुक की स्थिति नहीं है अमुक ऐसा है और इन आरोपों की कोई सच्चाई नहीं होती और आरोप लगाने वाले स्वयं वास्तव में स्थिति रहित लोग होते हैं। हमें तो अल्लाह तआला के आदेश पर चलना है और अल्लाह तआला ही है जो हमारा रब्ब भी है और प्रत्येक का रब्ब है वह रिज़्क भी देता है और पालता भी है और जब अल्लाह तआला से हम सब कुछ ले रहे हैं तो बात अल्लाह की मानी जाएगी न कि उन आरोप लगाने वालों की। जैसा कि मैंने कहा ये शिकायतें करने वाले लोग यही चाहते हैं कि दूसरों को शरीयत के अनुसार सज़ा दी जाए और ख़ुद अपने आप को शरीयत की आज्ञाओं से बाहर निकाल देते हैं। बरी कर देते हैं। ख़ुद ही अपने न्यायाधीश बन जाते हैं। तो ऐसे लोगों को बाहर भी जब बात सामने आएगी, खुलेगी तो उन्हें भी शरीयत के अनुसार ही सज़ा मिलेगी।

कुछ बातें ऐसी हैं जहां गवाहों की आवश्यकता होती है। अगर गवाह पेश नहीं हुए तो इस बात की कोई हैसियत नहीं होती और बहरहाल इसे शरीयत के अनुसार कुरआन के अनुसार फिर इसका फैसला होगा।

कई बार यह कहा जाता है कि उसने झूठी कसम ली और अपने आप को बचा लिया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जब एक बार ऐसा मामला आया दो झगड़ने वाले आए तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह के आदेश के अनुसार एक पक्ष कसम खाएगा। दूसरे ने कहा यह तो झूठा व्यक्ति है यह तो सौ कसमें भी खा लेगा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने तो ख़ुदा तआला के आदेश के अनुसार फैसला करना है अगर यह झूठी कसम खाता है तो उसका मामला फिर ख़ुदा तआला के साथ वह ख़ुद ही उसे सज़ा देगा।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 33 पृष्ठ 265 से 271 ख़ुत्बा 5 सितम्बर 1952ई)

अत: यह हमेशा याद रखना चाहिए कि किसी की शिकायत पर फैसला सिर्फ उस के बताए हुए नियम के अनुसार नहीं होगा। शिकायत पर फैसला ख़ुदा तआला के बताए हुए तरीके के अनुसार होगा। जहां दो गवाहों की ज़रूरत है वहाँ दो गवाह पेश करने होंगे। जहां चार गवाहों की जरूरत है वहाँ चार गवाह पेश करने होंगे और तदनुसार ही फिर अनुसंधान और फैसला होगा। हमारी सफलता इसी में है कि हम ख़ुदा तआला के आदेश के अनुसार अपने मामले और निर्णय करने वाले बनें और अपने निजी अहंकारों और प्राथमिकताओं को आधार बनाकर प्रशासन को मजबूर करने वाले या समय के ख़लीफा को मजबूर करने वाले न हों कि उसके अनुसार निर्णय किए जाएं। अल्लाह तआला शिकायत करने वालों को भी समझ दे कि वे अगर सही समझते हैं तो खुल कर सभी सबूतों के साथ शिकायत करें जिसमें उनका नाम पता हो और फिर जांच में वह भी शामिल होंगे। इसी तरह जब लोग देखते हैं कि वास्तव में जमाअत की प्रणाली में कोई विघ्न पड़ रहा है तो हिम्मत से सामने आना चाहिए और शिकायत करनी चाहिए और फिर प्रत्येक बात का मुकाबला करना

चाहिए। इसी तरह अल्लाह तआला जमाअत की प्रणाली जो है उसको भी तौफीक दे और बुद्धि दे कि समय के ख़लीफा से जो फैसला करने पर निर्धारित किए गए हैं वे भी जब फैसले कर रहे हों तो न्याय के हर पहलू को ध्यान में रखते हुए और अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलते हुए और सुन्नत के अनुसार निर्णय करने वाले बनें।

नमाज़ों के बाद जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा तो एक शहीद का जनाज़ा है आदरणीय शेख साजिद महमूद साहिब पुत्र आदरणीय शेख़ मजीद अहमद साहिब जिन की 55 साल उम्र थी हलका गुलज़ार हिजरी ज़िला कराची में रहते थे। विरोधियों ने 27 नवम्बर 2016 ई को शाम नमाज़ मग़रिब के समय घर के बाहर कार में बैठे हुए फायरिंग कर शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। विवरण के अनुसार शेख़ साजिद महमूद साहिब गुलशन मअमार कराची में फ्लोर मिल्स के स्पेयर पार्टस की आपूर्ति का काम करते थे और 27 नवम्बर 2016 ई को शाम मग़रिब के समय बाज़ार से घर का सौदा समान ले कर आए और अब कार में बैठे ही थे कि एक मोटरसाइकिल पर सवार अज्ञात लोगों ने आप पर चार फायर किए और फिर बाइक पर जाते हुए पलटकर फिर से चार फायर किए और मौके से फरार हो गए। फायरिंग के परिणाम में एक गोली साजिद महमूद साहिब के सीने में दाईं ओर लगी और पसली से लगकर बाईं ओर से आर पार निकल गई और एक गोली पैर में लगी। साजिद महमूद साहिब को तुरंत पास स्थित अस्पताल में ले जाया गया जहां से उन्हें आग़ा ख़ान अस्पताल शिफ्ट कर दिया गया लेकिन वह बच न सके और इलाज शुरू होने से पहले ही शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके परिवार में अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा आदरणीय शेख़ फज़ल करीम साहिब के माध्यम से हुआ जिन्होंने 1920 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथ पर बैअत की थी। शहीद स्वर्गीय के पिता शेख़ मजीद अहमद साहिब पाकिस्तान बनने पर कानपुर से हिजरत करके लाहौर आए थे और 1961ई में कराची में रहने लगे। शहीद के दादा आदरणीय ख्वाजा मुहम्मद शरीफ साहिब मरहूम जमाअत अहमदिया दिल्ली दरवाज़ा लाहौर के लंबे समय तक सदर रहे। आपके पड़नाना हज़रत अलादीन साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। इसी तरह आदरणीय सेठ मुहम्मद सिद्दीक बानी साहिब मरहूम ऑफ कलकत्ता शहीद स्वर्गीय की पत्नी के नाना हैं। शहीद स्वर्गीय ने बी.ए तक अध्ययन किया। पांच साल बेहद कठिन परिस्थितियों में गुज़ारा। इसके बाद फ्लावर मिल्स के स्पेयर पार्टसों की आपूर्ति का व्यवसाय शुरू किया जिसमें अल्लाह तआला ने बहुत बरकत दी और बहुत बड़ा व्यापार हो गया। शहीद स्वर्गीय के बेटे हारिस महमूद साहिब नायब क़ायद मजलिस भी हैं और गुलशन इकबाल कराची के सेक्रेटरी वसीयत भी हैं। बेटे ने भी शिक्षा प्राप्त करने के बाद ए.सी.सी ए करने के बाद पिता के साथ ही व्यापार में शामिल हो गए। शहीद मरहूम अनगिनत गुणों के मालिक थे। इसी तरह शहीद की बेटी सना मुबश्शिर कराची में पढ़ रही हैं और उन्हें छह महीने अमेरिका जाने का स्कालरशिप भी मिला जहां से वह एक शॉर्ट कोर्स करके आईं। मरहूम ख़िलाफत से बेपनाह प्यार और गहरी प्रतिबद्धता रखने वाले थे। बच्चों को भी ख़िलाफत और जमाअत की प्रणाली से जुड़े रहने की हिदायत करते थे। चन्दों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले थे और बेटे को भी हिदायत करते थे। हमेशा अपने चंदों के बारे में चिंतित रहते थे और चंदे के भुगतान के लिए दुकान में ही अलग एक तिजोरी रखी था जिस में साथ साथ चंदे की राशि डाल देते थे। लेनदेन में बहुत खरे और ईमानदार हमेशा सच्चाई को ध्यान में रखने वाले क्षमा से काम लेने वाले भाई बहन से प्रेम का व्यवहार और कभी किसी से नाराज़ नहीं होते थे। मरहूम एक परिष्कृत और शुद्ध विचार वाले व्यक्ति थे। ख़ून के रिश्तों को बहुत महत्त्व देते थे। शहीद स्वर्गीय ने दो दुकानों के नाम भी अपने स्वर्गीय पिता और स्वर्गीय ससुर के नाम पर रखे हुए थे। अपनी पत्नी के रिश्तेदारों से आदर्श व्यवहार करते थे। दोस्तों और सभी रिश्तेदारों से साफ दिल से मिलते थे तबीयत में द्वेष और वैर बिल्कुल नहीं था। विभिन्न लिखने वालों ने जो लिखा इन सबका सार या निचोड़ यही बनता है कि जो बातें मैंने बयान की हैं शहीद की विशेषताओं का वर्णन किया है। शहीद स्वर्गीय की मां आजकल गंभीर बीमार हैं उनकी बीमारी के कारण उन्हें बेटे की शहादत के बारे में बताने में कठिनाई आ रही थी लेकिन जब उनके ज्ञान में आया और मृतक बेटे को देखा तो अपने आप कहा कि मेरा बेटा शहीद है कोई नहीं रोएगा और इस वाक्य को कई बार दोहराया। शहीद स्वर्गीय पत्नी ने बड़े साहस और हिम्मत से अपने पति की शहादत की ख़बर सुनी और बहुत उच्च धैर्य दिखाया। उनके बेटे का कहना है कि मेरे पिता की तबीयत में असाधारण ठहराव था और ख़ुदा पर विश्वास में बहुत बड़ा हुआ था। बार बार यही कहते थे ख़ुदा ने मुझे बहुत सम्मान दिया है इतना सम्मान कि मैं ख़ुद भी विश्वास नहीं कर सकता। इबादतों में बहुत नियमित थे और रिश्तेदार भी यही कहते हैं बड़े सरल सहानुभूति वाले विनम्र व्यक्ति थे। मरहूम के ग्यारह बहन भाई थे और सब रिश्तेदारों से शहीद स्वर्गीय अच्छा व्यवहार करते उनका ध्यान रखा करते थे। ज़िला सक्खर में जब जमाअत के हालात ख़राब हुए और शहादतें हुईं तो शहीद मरहूम कई बार कई कई दिन जाकर वहां डयूटियाँ दिया करते थे। उनकी बेटी कहती हैं कि उनकी वफात के बाद मैंने सपने में देखा एक बहुत बड़ा बगीचा है जिसमें कई नूरानी लोग इकट्ठा हैं सब ने उजले और सफेद कपड़े पहने हुए हैं और अब्बा भी वहां हैं। उनका बड़ा ऊंचा स्थान है सब ने अब्बा को घेरा हुआ है और ख़ुशी व्यक्त करते हैं और पिताजी एक तरफ चल पड़ते हैं तो सब लोग काफिले के रूप में साथ चलते हैं और सब लोग उन के पिता को देखकर ख़ुश हो रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा शहीद स्वर्गीय की मां आदरणीया बहुत वृद्धा हैं। चलने-फिरने से भी असमर्थ हैं। शहादत के बाद उन्होंने सपने में देखा कि शहीद स्वर्गीय ने अपनी मां को संबोधित करके कहा कि मैं यहाँ बहुत ख़ुश हूँ और संतुष्ट हूँ मेरी वजह से आप ने बिल्कुल परेशान नहीं होना चाहिए। उनके पीछे रहने वालों में मां आदरणीया पत्नी मंसूरा यास्मीन साहिबा पुत्र शेख हारिस महमूद और बेटी सना मुबश्शिरा के अतिरिक्त चार भाई और छह बहनें हैं। अल्लाह तआला शहीद के स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्ल को भी उनके नक्शे कदम पर चलने की शक्ति प्रदान करे।

अगला जनाज़ा आदरणीय शेख अब्दुल क़दीर साहिब इब्ने शेख अब्दुल करीम साहिब का है जो दरवेश कादियान थे। 26 नवम्बर 2016 ई को दिल की हरकत बंद होने के कारण से 92 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप के परिवार में अहमदियत हज़रत अब्दुल्लाह सनौरी साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से आई। नवंबर 1947 ई में जब कादियान से अंतिम काफिला पाकिस्तान के लिए रवाना हुआ तो आप ने अपनी बीमार मां को सहारा देकर ट्रक में बैठे थे कि कादियान की सीमा के पास आप की माँ ने आप ट्रक रुकवा कर केंद्र की रक्षा के लिए उतार दिया और यूँ आप को दरवेशी का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ख़िलाफत की प्रणाली और जमाअत की प्रणाली से अत्यधिक प्यार था। अल्लाह तआला पर सही भरोसा और विश्वास था। हर सफलता और विफलता ख़ुदा की ख़ुशी समझकर स्वीकार करते थे। पत्नी बच्चों और करीबी रिश्तेदारों से हमेशा अच्छा व्यवहार करते थे। अंतिम उम्र तक अपने काम ख़ुद अपने हाथों से करते रहे। उन्हें दफतर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के विभिन्न विभागों में सेवा की तौफीक़ मिली। आप के बेटे ने बताया कि सालाना जलसा की वजह से आप ने घर में सफेदी के लिए सीमेंट आदि मंगवा कर रखा था। उसी रात आप ने बुलाकर कहा कि लगता है कि मेरा समय निकट है अमुक व्यक्ति से मैंने पांच सौ रुपए लिए थे। वह अदा करने हैं इसी तरह अन्य हिसाब किताब भी बताया और थोड़ी ही देर में अल्लाह को प्यारे हो गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और एक बेटे आदरणीय नासिर वहीद साहिब कादियान में सेवा की तौफीक़ पा रहे हैं।

तीसरा जनाज़ा तनवीर अहमद लोन साहिब नासिराबाद कश्मीर का है यह पुलिस में थे 25 नवंबर को ड्यूटी के दौरान ज़िला मुख्यालय कुलगाम में अज्ञात बंदूकधारियों की फायरिंग से वफात पा गए। यह भी शहीद का ही स्थान रखते हैं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। शहीद मरहूम नमाज़ रोज़ा के पाबन्द थे। नेक दिल ग़रीबों को ध्यान रखने वाले मिलनसार अच्छे चरित्र वाले, वफादार, लोगों की भलाई करने वाले अत्यंत साहसी और अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले इंसान थे। वित्तीय कुरबानी में हमेशा आगे रहते थे। चंदे हमेशा बड़ा नियमित हिसाब के अनुसार और वृद्धि के साथ दिया करते थे। अपने छोटे भाई बहन की दिलजोई और मदद और उनकी शिक्षा-दीक्षा का हमेशा ख्याल रखते। पड़ोसियों का कहना है कि आप वास्तव में पड़ोसी का अधिकार देने वाले थे। उनके विभाग वालों का बयान है कि आप अपने दिए गए कामों को करने में हमेशा चाक-चौबंद रहते थे कभी भी लापरवाही और कोताही से काम नहीं लेते थे। पीछे रहने वालों में मां के अतिरिक्त दो बहनें छह भाई और पत्नी और तीन मासूम बच्चे यादगार छोड़े हैं। आप का एक बच्चा तहरीक वक्फ नौ में शामिल है। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और इन के बच्चों को भी हमेशा जमाअत और ख़िलाफत से जोड़े रखे नेकियों पर कायम रखे। उनका ध्यान रखने वाला हो

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

जिनकी आँखों पर पर्दे पड़े हों, जिन्होंने यह फैसला किया है कि हम ने नहीं मानना उन्हें न ही अल्लाह तआला के समर्थन नज़र आते हैं न ही निशान नज़र आते हैं और नबियों का इनकार करने वालों का हमेशा यही तरीका है कि निशान देखकर भी यही कहते हैं कि हमें निशान दिखाओ। उनके सीमा से बढ़ जाने के कारण उनके दिलों को अल्लाह तआला बंद कर देता है तो वह सच्चाई को पा ही नहीं सकते और कभी कभी नबी के समर्थन में अल्लाह तआला उन्हें ही इबरत का निशान बना देता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने समर्थन में अल्लाह तआला के बहुत से निशान बताए कि यह पूरे हुए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निशान भी बताए कि आपने यह यह फरमाया। ये पेशगोइयां फरमाईं ये पूरी हुईं लेकिन इन धार्मिक नेताओं ने ख़ुद भी नहीं माना और लोगों को भी गुमराह किया और अब तक करते चले जा रहे हैं।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में प्रकट होने वाले निशानों का ईमान वर्धक वर्णन।

हम जो दिन प्रति दिन अल्लाह तआला के समर्थन के नए नए नज़ारे देखते हैं इंशा अल्लाह तआला वह दिन ज़रूर आएगा जब यह नज़ारे भी नज़र आएंगे और हम इतना विकसित करने वाले होंगे कि दूसरे लोग दूसरी जातियां बिल्कुल मामूली स्थिति की होंगी लेकिन हमें अपने अंदर भी और अपनी नस्लों के अंदर भी धर्म की रूह फूंकने की ज़रूरत है जिस से हमें अल्लाह तआला यह नज़ारे दिखाए।

जहां समर्थन हों वहाँ मुखाल्फ़तें भी होती हैं और हमेशा से नबियों की जमाअतों के साथ इस तरह होता है लेकिन यह मुखाल्फ़तें भयभीत नहीं करतीं बल्कि ईमान को मज़बूत करती हैं ईमान में वृद्धि का कारण बनती हैं।

कुछ दिन हुए रबवा में जो तहरीक जदीद के दफतरों और ज़ायाउल इस्लाम प्रैस पर सरकार के पुलिस की विशेष संस्था के Raid और और कुछ कार्यकर्ताओं की गिरफतारी पर अहमदियों की प्रतिक्रियाएं कि हम इन बातों से डरने वाले नहीं बल्कि हमारे ईमान मज़बूत हैं और हम हर मुश्किल से लड़ेंगे और बलिदान देंगे।

अलजीरिया में हुकूमत की तरफ से अहमदियों पर बड़ा ज़ुलम हो रहा है।आरोप लगाया जाता है कि अहमदी सरकार के ख़िलाफ साज़िश कर रहे हैं या फसाद पैदा करना चाहते हैं हालांकि दुनिया में किसी भी जगह कोई अहमदी कभी देश के कानून से लड़ने वाला नहीं और सरकार से लड़ने वाला नहीं बल्कि हम तो शांति, प्यार और मुहब्बत फैलाने वाले हैं हां उसके लिए कुरबानी भी देनी पड़े तो देंगे। इंशा अल्लाह।

पाकिस्तानी मौलवी हो या कोई धार्मिक नेता हों या सांसारिक शक्तियां हों अल्लाह तआला के निकट उनकी कोई हैसियत नहीं है वह भेड़ों जैसे लोग हैं और वे कभी भी अहमदियत की तरक्की में रोक नहीं बन सकते लेकिन इसके लिए केवल हम अपने मुबल्लिग़ों पर निर्भर नहीं कर सकते कि वह प्रचार करें और अहमदियत को फैलाएं अगर इस तरक्की का हिस्सा बनना है और हमें बनना चाहिए तो हमें भी दुआओं की तरफ अपना ध्यान फैरना होगा। अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाना होगा। अल्लाह तआला से संबंध को बढ़ाना होगा और यही चीज़ें हैं जो अहमदियत के विरोध को भी ख़त्म करेंगी और अहमदियत की तरक्की में भी हमें इंशा अल्लाह तआला हिस्सेदार बनाने वाली होंगी।

आदरणीय सफनी ज़फर अहमद मुबल्लिग़ इंडोनेशिया की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 9 दिसम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

जिनकी आँखों पर पर्दे पड़े हों, जिन्होंने यह फैसला किया है कि हम ने नहीं मानना उन्हें न ही अल्लाह तआला के समर्थन नज़र आते हैं न ही निशान नज़र आते हैं और नबियों का इनकार करने वालों का हमेशा यही तरीका है कि निशान देखकर भी यही कहते हैं कि हमें निशान दिखाओ। उनके सीमा से बढ़ जाने के कारण उनके दिलों को अल्लाह तआला बंद कर देता है तो वह सच्चाई को पा ही नहीं सकते और कभी कभी नबी के समर्थन में अल्लाह तआला उन्हें ही इबरत का निशान बना देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोद्धी भी ऐसे थे जिन्हें बावजूद देखने के अपनी बेशर्मी के कारण से कोई निशान नज़र नहीं आता था या नज़र फेर लेते थे और फिर इन में कुछ कुफ्र के इमाम इबरत का निशान भी बने।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने समर्थन में अल्लाह तआला के बहुत से निशान बताए कि ये पूरे हुए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निशान भी बताए कि आपने यह यह फरमाया। ये पेशगोइयां फरमाईं, ये पूरी हुईं लेकिन इन धार्मिक सरदारों ने ख़ुद भी नहीं माना और लोगों को भी गुमराह किया और अब तक करते चले जा रहे हैं। इन निशानों का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सिलसिला की सच्चाई के लिए कुछ विभिन्न अवसरों पर अलग निशान बताए। आप ने जो निशान वर्णन किए हैं और यह बताते हुए फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उन्हें निशान ठहराया है और कुछ का आपने उल्लेख किया। उनमें से कुसूफ और ख़सूफ का निशान है अर्थात चांद सूर्य ग्रहण का निशान है। आपने फरमाया कि जब तक यह निशान पूरा नहीं हुआ था मौलवी लोग थे वे रो रोकर इस हदीस को पढ़ा करते थे और जब यह चिन्ह पूरा हुआ और न एक बार बल्कि दो बार पूरा हुआ। एक इस देश में अर्थात भारत में और दूसरी बार अमेरिका में तो यही लोग जो इस निशान को मांगते थे अपनी बात से फिर गए। निशान से इनकार नहीं कर सके क्योंकि वह तो स्पष्ट हो गया था लेकिन बेशर्मी और ज़िद्द आड़े आ गई। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि मेरे एक दोस्त ने बताया कि जब यह चिन्ह पूरा हुआ तो एक मौलवी ग़ुलाम मुर्तज़ा नामक ने ख़ुसूफ कमर के समय अपनी जांघों पर हाथ मार कर अर्थात बड़े दुःख और शोक से व्यक्त करते हुए कहा कि अब दुनिया भटक गई। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि विचार करो क्या वह ख़ुदा तआला से बढ़कर दुनिया का हितैषी था। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में प्लेग का निशान भी है। नहरें निकाले जाने का निशान भी है। ये कुरआन करीम की भविष्यवाणी है। नई आबादियां होने के निशान

भी हैं। पहाड़ चीरे जाने के निशान भी हैं। पुस्तकों और समाचार पत्रों के प्रकाशन के निशान भी हैं। नई सवारियां हैं। अत: कई निशान हैं जो आपने वर्णन किए हैं जिनकी ख़बर कुरआन में भी है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी दी।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 157-158 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह बयान फरमाते हुए कि लोग बजाय निशानों और अल्लाह तआला के समर्थनों को देखने के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आपत्ति करते हैं और ऐसी छोटी छोटी आपत्ति कि अजीब अजीब आपत्ति होते हैं। आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद ने निशान पर निशान दिखाए। कुछ लोग आए जिन्होंने आकर इस प्रकार के आरोप किए कि उनकी तो पगड़ी टेड़ी है यह मसीह मौऊद कैसे हो सकते हैं।? ।हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि आप ने चमत्कार पर चमत्कार दिखाया मगर कुछ ऐसे लोग आए जिन्होंने कहा कि यह तो 'काफ' ठीक से नहीं बोल सकते हैं यह कहाँ से मसीह मौऊद हो सकते हैं।? आप ने निशान पर निशान दिखाया मगर ऐसे लोग आए जिन्होंने कहा उन्होंने पत्नी के लिए ज़ेवर बनाए हैं यह बादाम रोग़न उपयोग करते हैं उन्हें हम कैसे मान सकते हैं।? तो यह आरोप थे। फिर आप कहते हैं कि ख़ुदा के निशानों से आँखें बंद मत करो। फरमाया कि कई लोग हज़रत साहिब के अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आकर कहते। कोई निशान दिखाएँ तो आप फरमाते क्या पहले निशान से तुम ने कोई लाभ उठाया कि और चाहते हो।? जब पहले हज़ारों निशानों से तुम ने कोई लाभ नहीं उठाया तो किसी और से कैसे उठाओगे। तो ऐसे लोग हमेशा वंचित रहते हैं उनकी यही किस्मत है कि वंचित रहें।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 11 पृष्ठ 224-225)

एक ऐसा ज़बरदस्त निशान जो हर दिन पूरा होता है जिसके बारे में बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि किताब बराहीन अहमदिया में अल्लाह तआला मुझे एक दुआ सिखाता है अर्थात इल्हाम के रूप में फरमाता है कि رَبِّ لَاتَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوَارِثِیْنَ अर्थात मुझे अकेला मत छोड़ और एक जमाअत बना दे। यह आप ने इस का अनुवाद ख़ुद ही किया हुआ है। फिर कहते हैं कि दूसरी जगह फ़रमाया يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ हर एक तरफ से तेरे लिए वह सामान जो मेहमानों के लिए आवश्यक है अल्लाह तआला ख़ुद ही प्रदान करेगा और वह प्रत्येक मार्ग से तुम्हारे पास आएंगे और फिर फरमाया। يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ और प्रत्येक राह और हर तरफ से तेरे पास मेहमान आएंगे। आपने फरमाया कि 26 साल पहले की भविष्यवाणी है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 161)

जब आप ने यह उल्लेख किया और जो अब तक बड़ी शान से पूरा हो रहा है। और यह जमाअत की तरक्की की भविष्यवाणी है। हम देखते हैं कि यह भविष्यवाणी आज तक बड़ी शान से पूरी हो रही है। आप की जमाअत का हर दिन बढ़ना, वित्तीय कुरबानी में लोगों का बढ़ना, आप की प्रामाणिकता की एक ज़बरदस्त दलील है और एक निशान है लेकिन उसे ही नज़र आता है यह जिस की आंख रौशन हो। अंधे को नज़र नहीं आता।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इलहामों के बारे में जो अहमदियत के प्रभुत्व के माध्यमों और जमाअत की तरक्की के बारे में बयान किए हैं उन में से कुछ प्रस्तुत करता हूं। आप कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी अल्लाह तआला ने लगातार बताया कि जमाअत अहमदिया को भी वैसी ही कुरबानी करनी पड़ेंगी जैसी पहले नबियों की जमाअतों को करनी पड़ी तो एक बार आप ने रोया में देखा (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक रोया में देखा) कि निज़ामुद्दीन के घर में दाखिल हुआ हूँ। निज़ामुद्दीन के अर्थ हैं धर्म की प्रणाली और इस रोया का मतलब यह है कि आख़िर अहमदिया जमाअत एक दिन धर्म का निज़ाम बन जाएगी और दुनिया के और सारे निज़ामों पर ग़ालिब आ जाएगी। इंशा अल्लाह तआला लेकिन यह प्रभुत्व कैसे होगा इस रोया में आप फरमाते हैं कि हम इस घर में कुछ हसनी रूप से प्रवेश करेंगे और कुछ हुसैनी ढंग से प्रवेश करेंगे। यह सब लोग जानते हैं कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हो ने जो हासिल किया वह सुलह से और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो ने जो हासिल किया वह शहादत से प्राप्त किया।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया गया कि निज़ामुद्दीन के स्थान पर जमाअत पहुंचेगी तो सही मगर कुछ सुलह मुहब्बत और प्यार से और कुछ शहादतों और बलिदान के माध्यम से। अगर हम में से कोई व्यक्ति यह समझता है कि बिना शांति और प्यार और स्नेह के इस सिलसिला की तरक्की होगी तो वह भी ग़लती करता है और अगर कोई व्यक्ति यह समझता है कि बिना बलिदान और कुरबानियों के यह सिलसिला तरक्की करेगा तो वह भी ग़लती करता है। हमें कभी सुलह और नर्मी की तरफ जाना होगा और कभी हुसैनी तरीके अपनाना होगा जिसका अर्थ यह है कि हमें दुश्मन के सामने मर जाना है मगर उसकी बात नहीं माननी। यह दोनों तरीके हमारे लिए मुकद्दर हैं न खाली मसीहियत वाला व्यवहार हमारे लिए मुकद्दर है न खाली महदवियत वाला व्यवहार हमारे लिए मुकद्दर है एक बीच का रास्ता है जिस पर हमें चलना होगा। एक प्रभुत्व होगा सुलह और मुहब्बत और स्नेह के साथ और एक विजय होगी बलिदान के साथ उसके बाद जमाअत निज़ामुद्दीन के घर में होगी और उसे सफलता हासिल होगी(उद्धरित तफसीर कबीर जिल्द 7 पृष्ठ 583) और इन दोनों बातों का नमूना आज हम देखते हैं कि जमाअत के लोग दिखा रहे हैं। सुलह शांति और प्रेम का संदेश भी हमारी तरफ से है और धर्म के लिए कुरबानियां भी जमाअत ही दे रही है।

फिर आप ने एक जगह फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ और दिखाया गया। यह इसी इल्हाम का थोड़ा सा अधिक उल्लेख है कि यह जो मस्जिद मुबारक के पास मकान है (मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन का मकान था) इस में हम कुछ हसनी तरीके से प्रवेश करेंगे और कुछ हुसैनी ढंग से। कई लोग हैरान थे कि इल्हाम का मतलब क्या है? हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मैंने ख़ुद हज़रत साहिब से(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से) सुना है। आप फरमाते हैं कि पता नहीं कि इल्हाम का क्या मतलब है लेकिन समय पर अर्थ खुलते हैं।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 3 पृष्ठ 39-40)

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस ज़माने में जब आप के साथ एक भी व्यक्ति नहीं था फरमाया था कि ख़ुदा तआला ने मुझे ख़बर दी है कि तुम्हारी जमाअत इतनी तरक्की करेगी कि बाकी दुनिया की सारी क़ौमें इस तरह रह जाएंगी जिस तरह आजकल पुरानी क़ौमें हैं।"

(मिनहाजुत्तालेबीन , अनवारुल उलूम जिल्द 9 पृष्ठ 213)

हम जो दिन प्रति दिन अल्लाह तआला के समर्थन के नए से नए नज़ारे देखते हैं इंशा अल्लाह तआला वह दिन ज़रूर आएगा जब यह नज़ारे भी नज़र आएंगे और जमाअत अहमदिया इतनी तरक्की करने वाली होगी कि दूसरे लोग दूसरी जातियां बिल्कुल मामूली स्थिति की होंगी लेकिन हमें अपने अंदर भी और अपनी नस्लों के अंदर भी धर्म की रूह फूंकने की ज़रूरत है जिस से हमें अल्लाह तआला यह नज़ारे दिखाए। जहां समर्थन हों वहाँ मुखाल्फ़तें भी होती हैं और हमेशा से नबियों की जमाअतों के साथ इस तरह होता है लेकिन यह मुखाल्फ़तें भयभीत नहीं करतीं बल्कि ईमान को मज़बूत करती हैं ईमान में वृद्धि का कारण बनती हैं।

कुछ दिन हुए रबवा में जो तहरीक जदीद के दफतरों और ज़ायाउल इस्लाम प्रैस पर सरकार के पुलिस की विशेष संस्था जो काउंटर टेरेरिसट पुलिस कहलाती है जो टेररिज़ूम से लड़ने और उनके उन्मूलन के लिए बनाया गया है उन्होंने रेड की और दो मुरब्बियान और कुछ कार्यकर्ताओं को पकड़ कर ले गए। इस पर रबवा से कुछ लोगों ने मुझे पत्र लिखा जिन में महिलाएं भी शामिल है कि हम इन बातों से डरने वाले नहीं बल्कि ये घटनाएं देख कर हमारे ईमान मज़बूत हैं और हमेशा होते हैं और हम हर मुश्किल से लड़ेंगे और बलिदान देंगे। यही वह भावना है जो मोमिन में होनी चाहिए यह वह बातें हैं जिसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम लोगों को करनी पड़ेंगी। अल्लाह तआला के वादे और असंख्य समर्थन के नज़ारे हम देखते हैं वास्तव में अंतिम जीत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की ही है। मुखाल्फ़तें तो होती हैं और होंगी। यह जो हमला करने वाले, रेड करने वाले थे। (हमला तो नहीं रेड करने वाला कहना चाहिए) इन बेचारों को भी सबसे अधिक भय और आतंक जो है उन्हें अहमदियों की वजह से है क्योंकि अहमदी कहते हैं कि ख़ुदा का भय दिल में पैदा करो। अहमदी अल्लाह तआला से डराते हैं। यह कहते हैं कि अल्लाह तआला की पकड़ से बचो और डरो और उन के निकट के अहमदी ऐसी बातें कैसे कर सकते हैं यह हमें ख़ुदा तआला से डराते हैं तो इससे बड़ा आतंकवादी और कौन हो सकता है जो हमें ख़ुदा तआला से डराए इसलिए उन्हें पकड़ो और उन्हें ख़त्म करो।

अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि दे और यह इस तथ्य को समझने वाले हों और देश को इन मौलवियों से बचाए जो वास्तविक आतंकवादी हैं जिन्होंने देश में दंगा फैलाया हुआ है और कोई भी जान उन से सुरक्षित नहीं है और यह जो विशेष पुलिस टेररिसट ख़त्म करने की पुलिस है उन्हें भी इतनी हिम्मत दे कि बजाय शांतिपूर्ण और देश से प्यार करने वाले और देश के कानून का पालन करने वाले अहमदियों पर हाथ डालने के उन से लड़ने और उन्हें पकड़े जिनके हाथों जनता की जानें भी सुरक्षित नहीं और जो देश की जड़ें खोखली करने की कोशिश में लगे हुए हैं और वे लोग भी जो देश

को दोनों हाथों से लूट रहे हैं अहमदियों को दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला पाकिस्तान को सुरक्षित रखे और इन ज़ालिमों के चंगुल से बचाए। बाकी जहां तक कुरबानियां हैं वह अहमदी देते हैं देते रहेंगे और इन कुरबानियों को अल्लाह तआला इंशा अल्लाह तआला शीघ्र फल लगाएगा।

इसी तरह अल्जीरिया में भी अहमदियों पर सरकार द्वारा बड़ा ज़ुल्म हो रहा है अल्लाह तआला उन्हें भी सुरक्षित रखे और उन्हें भी दृढ़ता पूर्वक रखे। वहां की सरकार को भी बुद्धि दे कि वह भी इन अहमदियों की वास्तविकता को समझने वाले हों जो शांतिपूर्ण और कानून से बंधे हैं। आरोप लगाया जाता है कि अहमदी सरकार के ख़िलाफ साज़िश कर रहे हैं या फसाद पैदा करना चाहते हैं हालांकि दुनिया में किसी भी जगह कोई अहमदी कभी देश के कानून से लड़ने वाला नहीं और सरकार से लड़ने वाला नहीं बल्कि हम तो शांति, प्यार और मुहब्बत फैलाने वाले हैं हां उसके लिए कुरबानी भी देनी पड़ें तो देंगे। इंशा अल्लाह।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के हवालों की तरफ आता हूँ। आप फरमाते हैं कि दुनिया में सबसे ख़तरनाक विरोध प्रतिभागियों का होता है। पंजाबी में तो मशहूर है कि " शिराकत दा दाना सिर दुखदे वी खाना" तो सबसे बड़ा विरोध प्रियों और निकट सम्बंधियों का होता है क्योंकि वे बर्दाश्त नहीं कर सकते कि इन्हीं में से खड़ा होकर एक व्यक्ति दुनिया में बड़ाई और आदर प्राप्त करे। वे जो उस के मुकाबले में चप्पा चप्पा ज़मीन के लिए लड़ते मरते हैं वे कब सहन कर सकते हैं कि सारी दुनिया उसके पास आ जाए इसलिए वह पूरा ज़ोर लगाते हैं कि उसे दबाए यहाँ तक कि जब असहाय हो जाते हैं और कुछ नहीं कर सकते वह भी किसी न किसी तरह दिल का बुख़ार निकालने की कोशिश करते हैं। आप फरमाते हैं कि हज़रत ख़लीफा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि शाहपुर के रईसों में से किसी को जब ख़ान बहादुर का ख़िताब मिला तो इसी परिवार से एक औरत ने जो बहुत ग़रीब थी लड़के का नाम ख़ान बहादुर रख दिया। उससे पूछा गया कि यह तुम ने क्या किया यह नाम रखने की वजह क्या है? कहने लगी पता नहीं मेरा बच्चा बड़ा होकर क्या बनेगा लेकिन लोग जब नाम लेंगे तो जिस तरह उसके पति को खान बहादुर कहेंगे इसी तरह इसे भी कहेंगे तो जो कुछ और नहीं कर सकते वह नाम रख लेते हैं। तो आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब दावा किया तो आप के रिश्तेदारों से भी एक व्यक्ति ने इमाम होने का दावा किया। (साझीदारों की बात है यह अब यह रिश्तेदारों में से किसी ने कहा कि आप ने दावा किया है और लोगों की ओर आकर्षित हो रहे हैं तो मैं भी दावा करूं।) हज़रत मुस्लेह मौऊद फारसी का उदाहरण देते हैं कि " फिक्र हर कसे बकदर हिम्मत असत" कि हर किसी की चिंता और सोच उसकी हिम्मत और अनुमान के अनुसार होती है। आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह दावा किया कि सारी दुनिया के लिए हकम बनाकर भेजा गया हूं और छोटे स्तर के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि बड़े बड़े राजाओं पर भी अनिवार्य है कि मेरा अनुसरण करें लेकिन दूसरे जो उनके शरीक थे नाम ही रखने वाली बात थी। उसने जो रिश्तेदार थे उन्होंने दावा किया तो चौहड़ों के इमाम होने का दावा किया उधर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया तो यहां तक लिख दिया कि इंगलिस्तान के राजा पर भी अनिवार्य है कि मुझे माने अत: ख़ुद लिखकर रानी जो इस समय राजा थी भेज दिया। इसकी तुलना में चौहड़ों का इमाम होने का दावा करने वाले के साहस और उसकी जमाअत का यह हाल था कि यहां आकर जब थानेदार ने उससे पूछा कि क्या आप ने कोई दावा किया है? तो उसने कहा कि मैंने तो कोई दावा नहीं किया किसी ने यूं ही झूठी रिपोर्ट कर दी होगी तो शिरकत वालों का सबसे बड़ा विरोध है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 3 पृष्ठ 38-39)

आप फ़रमाते हैं रिश्तेदार और विशेष रूप से जब विरोधी हो जाए तो वह बहुत विरोध करते हैं और इसलिए फिर हर वैध अवैध रूप से नुकसान पहुंचाने की कोशिश भी करते हैं। यह उल्लेख करने के बाद आप फरमाते हैं कि हमारे दर्जनों ऐसे रिश्तेदार हैं जो अहमदियत के कारण कट गए इसलिए नहीं कि हम उनसे नहीं मिलना चाहते थे बल्कि इसलिए कि वे नहीं मिलना चाहते। हमें अपने परिवार के लोगों से गालियां मिलती थीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हमारी ताई साहिबा जो बाद में अहमदी हो गईं वह हमें बुरा भला कहती थीं। आप फरमाते हैं कि मुझे याद है कि एक बार मेरी उम्र छह सात साल की होगी कि मैं सीढ़ियों पर चढ़ रहा था तो उन्होंने मेरी ओर देखकर बार-बार यह कहना शुरू किया कि "जयों जया काँ ओहो जई कोको " इस वाक्य को उन्होंने इतनी बार दोहराया कि मुझे याद हो गया। मैंने घर जाकर यह बात बताई जब पूछा कि इसका क्या मतलब है। तो उन्होंने बताया कि जैसा तेरा बाप बुरा है वैसा ही बेटा भी बुरा है। आप कहते हैं कादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बहिष्कार किया गया। लोगों को आप के घर का काम करने से रोका जाता है। कुम्हारों को रोका गया। चौहड़ों को सफाई से रोका गया। हमारे प्यारे भाई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भौजाई और अन्य रिश्तेदार यहां तक कि आपके ममेरे भाई अली शेर ये सब तरह तरह की तकलीफें दिया करते थे। कहते हैं एक बार गुजरात क्षेत्र के कुछ दोस्त जो सात भाई थे कादियान में आए और बाग़ की तरफ सैर करने के लिए गए इसलिए गए कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर सम्बंधित ठहराया जाता था अर्थात बाग़ देखने गए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बाग़ है आप कहते हैं कि रास्ते में हमारे एक रिश्तेदार बाग़ीचा लगवा रहे थे उन्होंने उनसे पूछा कि कहां से आए हो और क्यों आए हो तो यह जो गुजरात से मेहमान आए थे उन्होंने कहा कि गुजरात से आए हैं और हज़रत मिर्ज़ा साहिब के लिए आए हैं उन्होंने कहा देखो मैं उनके मामा का लड़का हूँ और मैं जानता हूँ कि ऐसे और वैसे हैं। उनमें से एक ने जो दूसरों से आगे था बढ़कर उन्हें पकड़ लिया और अपने भाइयों (बाक़ियों को भी) आवाज़ दी कि जल्दी आओ। इस पर वह आदमी घबराया तो अहमदी ने कहा कि मैं तुम्हें मारता नहीं क्योंकि तुम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रिश्तेदार हो अपने भाइयों को तुम्हारी शक्ल दिखाना चाहता हूँ क्योंकि हम सुना करते थे कि शैतान नज़र नहीं आता, मगर आज हम ने देख लिया कि वह ऐसा होता है।

(उद्धरित दैनिक अल्फज़ल 4 दिसम्बर 1935ई जिल्द 23 संख्या 132 पृष्ठ 3,4)

फिर आप फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया गया कि तेरे सिवा इस परिवार की नस्ल काटी जाऐगी। (मुखाल्फ़तें हुईं सब कुछ हुआ लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सांत्वना दी और कहा कि नस्ल जो है तुझ से ही जारी होगी और बाकी सब काटी जाएंगी।) अत: ऐसा ही हुआ। अब इस परिवार में वही लोग बचे हैं जिन्होंने सिलसिला अहमदिया में प्रवेश किया और बाकी सब की नस्ल काटी गईं। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया तब इस परिवार में 70 के करीब आदमी थे लेकिन अब सिवाय उनके जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शारीरिक और आध्यात्मिक बेटे हैं इन 70 में से एक की भी संतान नहीं है हालांकि उन्होंने हज़रत साहिब का नाम मिटाने में जितना उनसे हो सका कोशिशें कीं और अपनी तरफ से पूरा ज़ोर लगाया और नतीजा क्या हुआ यही कि वह ख़ुद मिट गए और उनकी नस्लें काटी गईं। यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की एक भव्य निशानी है।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 3 पृष्ठ 39)

फिर ताई साहब की बैअत की घटना बयान फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि "कुछ पेशगोइयां और निशान ज़ाहिर में छोटे हैं लेकिन उनकी स्थिति पर विचार करने वालों के लिए इनमें कई बातें ऐसी होती हैं जिनसे ईमान में बहुत वृद्धि होती है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इल्हाम है जिसका ज्ञान मुझे कल ही हुआ है यद्यपि वह आदमी और उसकी हालत के बारे में है, लेकिन यह कई पेशगोइयां हैं। कई एक दोस्तों ने बताया कि उन्हें पहले से ही पता था मगर मुझे कल ही पता चला है। कल ताई साहिबा की मृत्यु के समय शेख याकूब अली साहब ने कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक पुराना इल्हाम है। "ताई आई"।(यह ताई हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो की ताई थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े भाई की पत्नी। तो फ़रमाया एक पुराना इल्हाम है "ताई आई" इस बारे में पुराने अहमदी बताते हैं कि उस समय इसके अर्थ समझ में नहीं आते थे कोई कुछ कहता और कोई कुछ लेकिन एक ही सीधे साधे अर्थ इस वाक्य कि यह हो सकते हैं कि कोई ऐसी औरत जिसका रिश्ता ताई का हो वह आ जाए। आने के दो अर्थ हो सकते हैं पास आना या जमाअत में आना। ख़ाली आ जाना कोई भविष्यवाणी नहीं हो सकती क्योंकि रिश्तेदार आया ही करते हैं हमारे यहां सभी के सभी बड़े लोग भी हज़रत साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भावज को ताई के उपनाम से पुकारते थे। मानो उनका नाम ही ताई था सिलसिला की किताबें पढ़ने वाले जानते हैं कि मुहम्मदी बेगम की भविष्यवाणी के ज़माने में वह सबसे अधिक विरोधी थीं (अर्थात यह ताई बहुत सख्त विरोधी थीं) क्योंकि वह परिवार में सबसे बड़ी थीं और भविष्यवाणी भी उसकी बहन की बेटी के बारे में थी इसलिए परिवार के नेता के रूप में उस समय वह इस रिश्ता में रोक डालना जिसे परिवार के अपमान के बराबर समझती थीं और उन के निकट उन का मुख्य कर्तव्य था कि वह मुकाबला करें। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि महिलाओं की प्रकृति के लिहाज़ से बड़ी औरत के लिए सम्मान और परिवार की गरिमा सभी धार्मिक

मामलों बल्कि सभी राजनीतिक मामलों और अन्य बातों से अधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इस समय हज़रत मसीह मौऊद का मसीह होने का दावा उनके निकट अर्थात ताई के निकट इतना महत्त्वपूर्ण नहीं था जितना परिवार की इज्ज़त थी और यूं भी चूंकि बड़ों के लिए छोटों का पालन करना मुश्किल होता है और मसीह मौऊद ताई साहिबा से छोटे थे और उन्होंने ने संपत्ति आदि में भाग नहीं लिया था (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने संपत्ति में हिस्सा नहीं लिया था) इसलिए आप का खाना आदि उनके घर से जाता था (ताई के घर से जाता था) इस लिहाज से भी वह ख़ुद को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मोहसिना समझती थीं। महिलाओं में यह एहसास स्वाभाविक रूप से होता है। इसलिए वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने से तुच्छ मानती थीं (इसलिए यह नहीं सोचती थीं कि आप ने संपत्ति नहीं ली और संपत्ति सब उनके पास है बल्कि इसलिए कि मैं खाना भेजती हूँ और खिलाती हूँ और खर्च उठा रही हों तो वह अपने से नीचे समझती थीं और स्वयं को मोहसिना समझती थीं।) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक अरबी शेर में फरमाते हैं कि

لُفَاظَاتُ الْمَوَائِدِ كَانَ أُكُلِي وَصِرْتُ الْيَوْمَ مِطْعَامَ الْأَهَالِي

इसका अर्थ यह है कि एक ज़माना था जब मैं दूसरों के टुकड़ों पर जीवन व्यतीत करता था लेकिन अब ख़ुदा ने मुझे ऐसी शान दी है कि हज़ारों हैं जो मेरे दस्तर ख़्वान से तृप्त होते हैं इस शेर में इस घटना की ओर भी संकेत है कि हज़रत अक़्दस की संपत्ति अलग नहीं थी भाई ही को सौंपी था और आप में उसे संभालने का एहसास नहीं था इसलिए आप के पिता भी कहा करते थे कि यह संपत्ति नहीं संभाल सकेगा। इसलिए इन परिस्थितियों में ताई साहिबा का ईमान लाना बड़ा मुश्किल होता था। (यह बाद में ईमान ले आई थीं, मान लिया था।) तो हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि तर्क और धार्मिक पहलू से नहीं बल्कि पारिवारिक दृष्टि से यह सारी बैकग्राउंड जो बयान हुई है क्योंकि उनके पास दोनों की स्थिति मालिक और नौकर की थी (यानी ताई ख़ुद को मालिक समझती थीं और हज़रत मसीह मौऊद व अलैहिस्सलाम को नऊज़ो बिल्लाह नौकर समझती थीं।) वह आप को एक ग़रीब आदमी समझती थी जो काम आदि कुछ नहीं करता था और उनके टुकड़ों पर पला था ऐसे में वह कभी गवारा न कर सकती थी कि आप उसकी बहन की लड़की के साथ विवाह करने में सफल हो जाएं। तो वह चूंकि सबसे बड़ी थीं इसलिए विशेष रूप से विरोधी थीं। उस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध बहुत ज्यादा था। रिश्तेदारों ने आप से मिलना छोड़ दिया था और आप भी उनसे नहीं मिलते थे बल्कि परिवार के विरोध की तो यह अवस्था थी कि माता साहिबा सुनाती हैं हज़रत अम्माजान रज़ियल्लाहो तआला अन्हा कि हज़रत साहिब के ननीहाल में एक बड़ी महिला थीं वह बैन डाला करती थीं कि चिराग़ बीबी के लड़के को कोई हमें देखने नहीं देता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को चोरों और डाकुओं की तरह अलग रखा जाता था क्योंकि उन को परिवार के सम्मान को बट्टा लगाने वाला माना जाता था ऐसे में यह भविष्यवाणी करना कि ताई अहमदी हो जाएगी ज़ाहिरी तौर पर एक असाधारण बात थी। मनुष्य का मन बदल सकता है, लेकिन देखना यह है कि हालात क्या कहते हैं। ऐसे समय में आप को इल्हाम हुआ कि " ताई आई।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ " ताई आई " ताई साहिबा हज़रत साहिब की भौजाई थीं। इसलिए इन शब्दों से यह मतलब था कि आप उस समय बैअत करेंगी जब बैअत लेने से उनका संबंध ताई का होगा। अगर उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करना होता तो इल्हाम के यह शब्द होते "भौजाई आई।" अर्थात उनकी भौजाई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भाभी थीं वह तो भौजाई आई का इल्हाम होता। अगर हज़रत ख़लीफा अव्वल के अहद में बैअत होती तो यह होना चाहिए कि मसीह मौऊद परिवार की एक महिला आई। मगर ताई शब्द से पता चलता है कि हज़रत मसीह मौऊद का लड़का जब आप का ख़लीफा होगा तो उसके हाथ पर बैअत करेंगी क्योंकि आप की औलाद से किसी ने ख़लीफा नहीं होना था तो ताई शब्द व्यर्थ था। आप कहते हैं कि इस इल्हाम में दरअसल तीन पेशगोइयां हैं पहला है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की औलाद में से ख़लीफा होगा। द्वितीय कि उस समय ताई साहिबा जमाअत में शामिल होंगी। तीसरा ताई साहिबा की उम्र के बारे में भविष्यवाणी थी और वह इस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिनकी अपनी उम्र उस समय सत्तर साल के करीब थी एक ऐसी स्त्री के बारे में भविष्यवाणी करते हैं जो उस समय भी उम्र में उनसे बड़ी थीं कि वह जीवित रहेगी और आप की औलाद से ख़लीफा होगा जिसकी बैअत में वह शामिल होगी। इतनी लंबी उम्र का मिलना बहुत बड़ी बात है। मानव दिमाग़ किसी जवान के बारे में नहीं कह सकता कि वह अमुक समय तक जीवित रहेगा।(यह ताई शायद 1927 में फौत हुई थीं) हालांकि यहां तक कि बूढ़े से संबंधित कहा जाए। तो यह एक बड़ा निशान है मानो उनका बैअत करना और मेरे ज़माने में करना फिर हज़रत मसीह मौऊद के बेटों में से ख़लीफा होना कई एक पेशगोइयां हैं जो दो शब्दों में ब्यान हुई हैं। फिर आप फरमाते हैं कि ताई जब अहमदी हुईं तब उन्होंने वसीयत भी की और इस का भी अजीब बैकग्राउंड है। कहते हैं मैं समझता हूँ कि जिस प्रकार की रिवायतें और भावनाऐं पुराने परिवारों में होती हैं उन्हें ध्यान में रखते हुए यह महान भविष्य वाणी है कि ताई साहिबा ने बैअत में शामिल होने के बाद वसीयत भी कर दी केवल बैअत नहीं बल्कि वसीयत कर दी पहले तो वह आप की प्रतिद्वंद्वी थीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पैतृक कब्रिस्तान के बजाय दूसरी जगह दफनाया जाए तो उन्होंने उस समय कहला भेजा कि आप को पूर्वजों के कब्रिस्तान के बजाय दूसरी जगह दफन न किया जाए क्योंकि यह एक अपमान है और बाद में भी कई साल तक इस पर आलोचना करती रहीं लेकिन फिर उनकी यह हालत हो गई कि ख़ुद वसीयत की और बहशती मकबरा में दफन हुईं। एक समझदार इंसान के लिए यह बहुत बड़ा निशान है। ज़ाहिर में यह मामूली बात है जो एक व्यक्ति के बारे में है लेकिन इसमें सच्चाई के सबूत के कई पहलू हैं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 11 पृष्ठ 251-253)

बावजूद विरोध के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में यही था कि उनका कबर पूर्वजों के कब्रिस्तान में हो लेकिन बाद में वसीयत की और आप भी बहश्ती मकबरा में दफन हुईं।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिल्ली के सफर की घटना बताते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक जगह फरमाते हैं कि "आदमी जो ख़ुदा तआला पर भरोसा रखता है वह कभी दिव्य कार्यों की तुलना में यह सोच नहीं सकता कि उनका नतीजा नहीं निकलेगा।(अल्लाह तआला पर भरोसा है ,विश्वास है कि अल्लाह तआला इसका अच्छा नतीजा निकालेगा।) आप फरमाते हैं कि मैं उस समय छोटा था जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दिल्ली आए थे।(यह ख़िताब आप दिल्ली में दिल्ली जमाअत को कर रहे थे) आप फरमाते हैं कि मैं बहुत छोटा था हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दिल्ली आए। आप यहाँ औलिया अल्लाह तआला के मज़ारों पर गए और बहुत देर तक लम्बी दुआएँ कीं और फरमाया मैं इस लिए दुआ करता हूँ कि इन बुज़ुर्गों की रूहें जोश में आएं तो ऐसा न हो कि उन के वंशज इस नूर की पहचान से वंचित रह जाएं जो इस ज़माना में अल्लाह तआला ने उनके निर्देशों के लिए भेजा है और फरमाया कि निश्चित रूप से एक दिन ऐसा आएगा कि अल्लाह तआला उन लोगों के दिल खोल देगा और वह सच्चाई स्वीकार करेंगे। फ़रमाते हैं कि यद्यपि उस समय छोटा था लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस कथन का प्रभाव अब तक मेरे दिल में रहता है तो यहां कि जमाअत अपनी कोशिशों का अगर कोई नेक परिणाम देखना चाहती है तो उसे चाहिए कि ख़ुदा पर भरोसा रखे। निश्चित रूप से एक दिन ऐसा आएगा कि जिस चीज़ को ख़ुदा तआला स्थापित करना चाहता है वह होकर रहेगी।" आप ने दिल्ली जमाअत के सम्बोधन के एक जवाब में यह बातें कही थीं।

(जमाअत अहमदिया दिल्ली के एक सम्बोधन का जवाब अनवारुल उलूम भाग 12 पृष्ठ 83-84)

अत: आज भी दिल्ली जमाअत का कर्तव्य है कि हिक्मत से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संदेश को पहुंचाएं। अब माशा अल्लाह वहाँ तब्लीग़ में प्रदर्शनियों आदि के माध्यम से इस में काफी तेज़ी आई है लेकिन मुसलमानों द्वारा विरोध भी है इसलिए उन्हें भी यह संदेश पहुंचाने की बहुत ज़रूरत है और इन सब बातों के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण बात जो है वह दुआ है इस ओर अधिक ध्यान की ज़रूरत है।

फिर और अधिक इसी बारे में आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोया का भी उल्लेख फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक कशफ़ में देखा कि एक नाली बहुत लंबी खुदी हुई है और उसके ऊपर भेड़ें लिटाई हुई हैं और प्रत्येक भेड़ के सिर पर एक कसाब हाथ में चाकू लिए हुए तैयार है और आसमान की तरफ उस की नज़र है जैसे आदेश का इंतजार है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं उस समय उस स्थान पर टहल रहा हूँ। उनके पास जाकर मैंने कहा कि قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ(अल्फ़ुर्कान :78) उन्होंने उसी समय चाकू फेर दें। जब वह भेड़ें तड़पीं तो उन्होंने, चाकू फेरने वालों ने कहा कि तुम चीज़ क्या हो। गन्दगी खाने वाली भेड़ें ही हो। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि इन दिनों में सत्तर हज़ार हैजा से मरा था। अत: अगर कोई ध्यान

नहीं करता तो ख़ुदा को उसकी क्या परवाह है। उस के काम रुक नहीं सकते वह होकर रहेंगे।" आपने फ़रमाया कि "हज़रत मसीह नासरी के तीन सौ साल बाद ईसाई धर्म को तरक्की नसीब हुई थी लेकिन हमारे हालात को देखा जाए तो पता चलता है कि हज़रत मसीह नासरी के समय से बहुत पहले इंशा अल्लाह तआला अहमदियत को तरक्की हासिल हो जाएगी।

(जमाअत अहमदिया दिल्ली के एक सम्बोधन का जवाब अनवारुल उलूम भाग 12 पृष्ठ 83-84)

पाकिस्तानी मौलवी हों या कोई धार्मिक नेता हों या सांसारिक शक्तियां हों अल्लाह तआला के निकट उनकी कोई हैसियत नहीं है वह भेड़ों जैसे लोग हैं और वे कभी भी अहमदियत की तरक्की में रोक नहीं बन सकते लेकिन इसके लिए केवल हम अपने मुबल्लिग़ों पर निर्भर नहीं कर सकते कि वे तब्लीग़ करें और अहमदियत को फैलाएं अगर इस तरक्की का हिस्सा बनना है और हमें बनना चाहिए तो हमें भी दुआओं की तरफ अपना ध्यान फैरना होगा। अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाना होगा। अल्लाह तआला से संबंध को बढ़ाना होगा और यही चीज़ें हैं जो अहमदियत के विरोध को भी ख़त्म करेंगी और अहमदियत की तरक्की में भी हमें इंशा अल्लाह तआला हिस्सेदार बनाने वाली होंगी। अल्लाह तआला हमें यह स्थान प्रदान फरमाए।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय सफनी ज़फर अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंडोनेशिया का है। 8 नवम्बर को यह हार्ट अटैक से उनकी वफात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। 71 साल उनकी उम्र थी। 18 अगस्त 1945 ई को पाडाँग सुमात्रा में यह पैदा हुए उनके पिता ज़ैनी दालान साहिब ने 1923 ई में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के मुबारक हाथ पर बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए और उन्होंने दो और युवकों के साथ मिलकर सुमात्रा और जावा में जमाअत के मिशनरी केन्द्रों की स्थापना की। इसी तरह सफनी सीहिब के पिता इंडोनेशिया के pioneer प्रचारकों में शामिल थे। ज़ैनी दालान साहिब के तीन बच्चे थे जिन में से सफनी ज़फर अहमद साहिब को वक्फ करने के बाद आप ने सीखने के लिए जामिया अहमदिया रबवा में भिजवाया। सफनी जफर अहमद साहब 17 जूलाई 1963 ई को रबवा रवाना हुए। लगभग ग्यारह साल रबवा में रहे जामिया अहमदिया में अध्ययन किया और 1974 ई में पास हो कर इंडोनेशिया वापस गए जहां अपनी पहली पोस्टिंग इंडोनेशिया में कलीमनतान (Kalimantan) में हुई इसके बाद पश्चिम जावा में क्षेत्रीय मुबल्लिग़ और क्षेत्रीय अमीर के रूप में सेवा करते रहे बाद में ईस्ट जावा और पापवा में सेवा की तौफ़ीक़ पाई। 1985 से 1987 तक जाम्बी में और 1987 ई के बाद से 1991 ईसवी तक उत्तरी सुमात्रा में क्षेत्रीय मुबल्लिग़ के कर्तव्यों को अदा करते रहे। 1991 से 1997 ईसवी तक जामिया अहमदिया इंडोनेशिया में बतौर शिक्षक फिक्ह: का विषय पढ़ाने की तौफीत मिली और इस दौरान प्रभारी विभाग प्रशिक्षण नोम्बायीन भी नियुक्त हुए। 1997 से 2001 तक लामपोनग में क्षेत्रीय मुबल्लिग़ नियुक्त हुए। आपके द्वारा इंडोनेशिया के विभिन्न क्षेत्रों में कई जमाअत की स्थापना हुई और कुछ मस्जिदों और मिशन हाउस का निर्माण भी हुआ। इंडोनेशियाई की ज़बान में निम्नलिखित चार पुस्तकों को लिखने की तौफीक भी मिली। ज़कात दर्शन, ख़ुदा तआला की राह में कुरबानी, जनाज़ा, इस्लाम में जिहाद का अर्थ। ये चार किताबें आप ने लिखीं। 2001 ई में आप रिटायर हुए कुछ समय से आप विभिन्न विकारों से पीड़ित थे। ख़िलाफत से आप का बड़ा पूर्ण वफ़ा और स्नेह का संबंध था। बड़ा गहरा आज्ञाकारिता का संबंध था। बड़े ईमानदार और वफादार सिलसिला के सेवक थे। उन के पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त एक बेटी और दो बेटे हैं। अल्लाह तआला उन सबको भी अहमदियत पर कायम रखे और अपने पिता की तरह नेकियों में बढ़ने और वफा व्यक्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और एक व्यावहारिक अहमदी बनाए।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

देखो ज़रा ख़ुदा रा

कलाम साहिबज़ादी अमतुल कुद्दूस बेगम साहिबा

जिसके थे मुंतज़िर वह शाहकार आ गया है
वह गुलग़दार रश्के गुलज़ार आ गया है
दीने मुहम्मद का ग़मख़ुवार आ गया है
वह मीरे कारवाँ अबरार आ गया है
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

महदी को मेरे जा के मेरा सलाम कहना
मेरी मोहब्बतों का उस को पयाम कहना
क़ौले नबी है यह तुम बा सिदके ताम कहना
लब्बैक या मसीह और महदी मुदाम कहना
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

क्या ज़लज़लों से सोचो मचती रही तबाही
ताऊं भी सिर उठा के देता रहा गवाही
जकड़े हुए दिल को है मुनकिरो नवाही
तीरह हुई हैं राहें, भटके हुए हैं राही
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

धरती सिमट रही है, कुहसार कट रहे हैं
सीने समुद्र के हर आन फट रहे हैं
गंजीना हाए इल्मो व इर्फां बट रहे हैं
इंसां के सामने से पर्दे से हट रहे हैं
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

ज़िन्दा ख़ुदा के मेरे ज़िन्दा निशान देखो
हर हर कदम पे उसके जलवों की शान देखो
यां इल्तफात व फज़ल रब्बे जहान देखो
और पूरा होते क़ौले वस्अ मकान देखो
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

बादे सबा ने आके प्यारी सी लय सुना दी
फिर रौशनी की लहरों ने शक्ल भी दिखा दी
जो भी ख़लिश थी दिल में जिस की वह सब मिटा दी
और चार दागे आलम में हो गई मुनादी
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

सोचो वह रहमतों का हकदार किस लिए है?
है मुफ़्तरी तो उससे यह प्यार किस लिए है?
निन्दा पे तुम्हें फिर इस्रार किस लिए है?
तक़ज़ीब किस लिए है, इनकार किस लिए है?
नज़रें उठा के अपनी देखो ज़रा ख़ुदा रा
कि चांद और सूरज करते हैं क्या इशारा

(है दराज दस्ते दुआ मेरा पृष्ठ 34.36)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 19 January 2017 Issue No. 3

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

इस जलसा के अवसर पर मेरा आप को यही संदेश है कि ख़ुदा तआला के साथ संबंध पैदा करो और तक्वा से काम लो। अपना नेक नमूना दिखाओ और अच्छे नमूना के द्वारा लोगों के दिल इस्लाम अहमदियत के लिए जीतो। ख़ुदा तआला से संबंध बनाने के लिए नमाज़ों पर स्थापित हो जाओ।

आपस में प्यार-मोहब्बत से रहें। अल्लाह तआला का आप पर बहुत बड़ा एहसान है कि आप को ख़िलाफत की नेअमत से सम्मानित किया गया है और इसके माध्यम से आप को एकता की लड़ी में पिरो दिया गया है। अत: आप इस एकता को बनाए रखें और आपस में भाई-भाई बनकर रहें।

संदेश सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफतुस मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनसरिहल अज़ीज़ जलसा सालाना इटली आयोजित 22,23 और 24 अप्रैल 2016 ई.

अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत अहमदिया इटली को दिनांक 22,23, 24 अप्रैल 2016 को अपना दसवां जलसा सालाना आयोजन की तौफ़ीक़ मिली। इस जलसा में आदरणीय मुहम्मद ताहिर नदीम साहिब अरबिक डेस्क यूके को बतौर प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ ने इस जलसा के लिए अपना संदेश भी भेजा था जो पाठकों के लाभ के लिए अख़बार फज़ल इंटरनेशनल लंदन 26 अगस्त 2016 ई के धन्यवाद के साथ प्रस्तुत करता है। (संपादक)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्राहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम व अला अब्देहिल मसीह मौऊद
ख़ुदा के फज़ल और रहम के साथ

जमआत अहमदिया इटली के प्रिय मित्रों!

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहू

अल्हम्दो लिल्लाह जमाअत अहमदिया इटली के मित्रों को इस साल एक बार फिर अपना जलसा सालाना आयोजित करने की तौफीक मिल रही है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इस जलसा सालाना को प्रत्येक दृष्टि से बरकत वाला बनाए। अल्लाह तआला इस जलसा में शामिल होने वाले सारे मित्रों को अपने फज़ल और रहम का वारिस बनाए और जलसा की बरकतों से भरपूर आध्यात्मिक लाभ की तौफ़ीक़ बख्शे। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद ने जमआत अहमदिया की स्थापना के यह उद्देश्य वर्णन किए हैं कि " इन के नमूना से लोगों को ख़ुदा याद आए और जो तक्वा तथा पवित्रता की प्रथम स्थिति पर कायम हों और जिन्होंने वास्तव में धर्म को दुनिया में प्राथमिकता दे ली हो। "

(तज़करतुश्शहादतैन)

इस जलसा के अवसर पर मेरा आप को यही संदेश है कि ख़ुदा तआला के साथ संबंध पैदा करो और तक्वा से काम लो। अपना नेक नमूना दिखाओ और अच्छे नमूने के द्वारा लोगों के दिल इस्लाम अहमदियत के लिए जीतो। ख़ुदा तआला से संबंध बनाने के लिए नमाज़ों पर स्थापित हो जाओ। मैं ने अपने कल के ख़ुत्बा में इबादत के महत्व और नमाज़ों की स्थापना की ओर ध्यान दिलाया था। इस के प्रकाश में अपने जीवन को जीने की कोशिश करें ताकि अल्लाह के सच्चे बन्दे बन सकें।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपस में प्यार-मोहब्बत से रहें। अल्लाह तआला का आप पर बहुत बड़ा एहसान है कि आप को ख़िलाफत की नेअमत से सम्मानित किया गया है और इसके माध्यम से आप को एकता की लड़ी में पिरो दिया गया है। अत: आप इस एकता को बनाए रखें और आपस में भाई-भाई बनकर रहें। यही एकता है जिस की स्थापना के लिए हज़रत मसीह मौऊद भेजे गए।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: " अल्लाह तआला किसी की परवाह नहीं करता मगर सालेह बन्दों की। आपस में भाईचारा और प्रेम को पैदा करो और दरिंदगी और मतभेद को छोड़ दो। सभी प्रकार के ठट्ठा और उपहास से पूर्ण रूप से अलग हो जाओ क्योंकि उपहास इंसान के दिल को सच्चाई से दूर कर के कहीं का कहीं पहुंचा देता है। आपस में एक दूसरे के साथ आदर से पेश आओ। प्रत्येक अपने आराम पर अपने भाई के आराम को प्राथमिकता दे। अल्लाह तआला से सच्ची शांति पैदा कर लो और उसकी आज्ञाकारिता में वापस आ जाओ ... प्रत्येक आपस के झगड़े और जोश और वैर को बीच में से उठा दो।" (मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 266-267)

अल्लाह तआला आप सब को इन नसीहतों का पालन करते हुए अपना वास्तविक बन्दा बनने, ख़ुदा की प्रजा का हमदर्द बनने और आपस में भाई भाई बनने की शक्ति प्रदान करे। आमीन।

वस्सलाम
ख़ाकसार
(मिर्ज़ा मसरूर अहमद)
ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad